मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अक्तूबर २०१६ अंक, वर्ष २१, नं ६९, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

देशरत्न डॉ.नायर जी मीरट के विश्व शान्ति आंदोलन ट्रस्ट का शान्तिदूत पुरस्कार ट्रस्ट के महामंत्री डॉ.पद्‌मश्री रवीन्द्रकुमार से स्वीकार करते हैं।

श्री. कैतक्कल सोमकुरुप 'महामुनि' नामक उपन्यास केलिए डॉ. नाय़र का पुरस्कार पाते हैं।

पद्‌मश्री डॉ.रवीन्द्रकुमार और पत्नी कमलेश्वर का आदर-सम्मान डॉ.नायरजी करते हैं।

SBT
Online
Overdraft Facility
With Your SBT Fixed Deposit
get more done in less time!
THE CONVENIENCE LOAN
Use SBT Internet Banking for availing loan against your fixed deposit.
Anytime... 24 x 7
Anywhere... Be it Home or Office
No documentation
SBT
A Long Tradition of Trust
State Bank of Travancore
statebankoftravancore | www.statebankoftravancore.com | YouTube user/sbtofficialchannel | For all Services & Products Call: 1800 425 7733

मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अक्तूबर २०१६ अंक, वर्ष २१, नं ६९   लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)
श्रीमती रजनीसिंह
डा. मिनी सामुवल
डा. सविता प्रमोद
डा.सुशीलकुमार कोटनाला (उत्तराखण्ड)

परामर्श-मण्डल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती श्रीदेवी एस.
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४
मूल्य-एक प्रति: २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरखडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लखनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाखपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडु:- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरात**:- अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटक**:- बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्रा**:- **मुम्बई**, कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगाल**:- कलक्कत्ता। **हैदराबाद**:- सुल्तान बाज़ार। **गौहाटी**:- कानपुरा। **नई दिल्ली**:- आर, के पुरम। गोवा:- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

keralahindisahityaacademy.com   **www.drnchandrasekharannair.in**

सम्पादकीय

"शान्तिदूत" पुरस्कार

विश्वशान्ति आन्दोलन ट्रस्ट, मीरट का एक पवित्र सम्मान है शान्तिदूत। मुझे २०१६ सितंबर ८ को लिखा एक पत्र रजि.पोस्ट द्वारा प्राप्त हुआ। उसमें मुद्रित वाक्य इस प्रकार था, "हमें बडा हर्ष है कि विश्वशान्ति आन्दोलन के अधिकारियों ने आपको शान्तिदूत सम्मान देकर आदर करने का निर्णय लिया है। तिरुवनन्तपुरम के एक सम्मेलन में सम्मान पहुँच दिया जायेगा।"

यह पत्र पाकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। पत्र में यह भी लिखा हुआ था, "दीर्घकाल से हिन्दी के द्वारा आप गाँधी विचार धारा का उज्ज्वल प्रचार करते हैं। आधुनिक संघर्षमय जीवन में आप शान्ति की स्थापना का सरल्त काम करके जीवन को देशीय धारा में लाने का सच्चा काम करते हैं।" आखिर सही पहचान की मान्यता होती देखकर चरितार्थता का महसूस हुआ।

मैंने केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के ३६-वाँ वार्षिक सम्मेलन १७-१०-१६ को होने की सूचना दी। विश्वशान्ति आंदोलन ट्रस्ट के महामंत्री ने सम्मेलन में उपस्थित होने की सूचना दी तदनुसार महामंत्री पद्मश्री डॉ.रवीन्द्रकुमार जी पत्नी समेत उपस्थित हुए। अपने उज्ज्वल भाषण के साथ पुरस्कार फलक एवं स्वर्णपदक मुझे पहना दिया। इस हर्ष से सभा ने अपनी उज्ज्वल संतृप्ति को घोषित किया। सभा में इस महोदय के अनुरुप अभिनन्दन जब हुआ तो सभा ने हार्दिक करघोष से उनको मंत्र मुग्ध कर दिया। वस्तुतः शांति ट्रस्त को मीरट से त्रिवेन्द्रम तक फ्लाइट से आकर पुरस्कार एवं सुवर्णपदक के समर्पण हेतु दो लाख रुपये का खर्च हुआ होगा। इस भव्य आचरण से विश्वशान्ति ट्रस्ट की प्रतिष्ठा अवश्य ही बढ़ गयी है। इस संस्था के इतिहास में यह घटना हमेशा केलिए एक मील का पत्थर बनकर रहेगी।

मेरे लिए पहले ही प्राप्त सौ-सौ पुरस्कारों सम्मानों से इसको सबसे अधिक मान्य मानता पड़ रहा है। यह सम्मान भी करुणामय परमात्मा को सादर समर्पित होता है।

प्रस्तुत पत्मश्री डॉ.रवीन्द्रकुमार जी के बारे में एक लेख ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रोफसर सिद्देश्वर प्रसादजी ने भेज दिया है, जो इसके साथ अन्यत्र प्रकाशित है।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

डोली खडी तोरे द्वार

जगन्नाथ विश्व, मनोबल, २५ एम.आई.जी,
हनुमान नगर, नागदा जं. (म.प्र)

प्रिय साजन संग लाया सुख का संसार।
गोरी सांवरी सलोनी डोली खडी तोरे द्वार।

बचपन की सारी सहेलियाँ मुंहबोली,
जिनके संग खोली तू हिरनी सी भोली,
सुध बुध भूली सब कर सौलह सिंगार
गोरी सांवरी सलोनी डोली खडी तोरे द्वार।

माँ की ममता ने सहलाई घुंघराली अलकें,
आशीष लिये भीग गई बाबुल की पलकें,
मत बिसराना नैहर का लाड दुलार
गोरी सांवरी सलोनी डोली खडी तोरे द्वार।

गोरी बहियाँ से बरजोरी कंगन करेगा।
नयन इन्द्रधनुष देख दर्पण हँसेगा,
पूर्ण होगी अभिलाषा मनचाही अपार,
गोरी सांवरी सलोनी डोली खडी तोरे द्वार।

अल्पना सजी मेंहदी हाथों में राती,
कल्पना ने गीत रचे गा उठे बराती,
सेहरा वाँध सैयां लगे शोभित सवार,
गोरी सांवरी सलोनी डोली खडी तोरे द्वार।

विदा आँसु का रुकता न पगला आवेश,
जा लाडली सुखी रहना साजन के देश,
माता पिता, सास ससुर, पति ईश्वर स्वीकार
गोरी सांवरी सलोनी डोली खडी तोरे द्वार।

दीपक मर्यादामय मन संजोना लजवंती
घर की शोभा सूरज सी रखना कुलवंती
रहे आजीवन गुंजित चिर मंगलाचार
गोरी सांवरी सलोनी डोली खडी तोरे द्वार।

•

चिरजीव महाकाव्य : महाकाव्यों का महाकाव्य

डॉ.अर्जुन शतपथी

यह सर्व विदित है कि प्रत्येक जाति का अपना इतिहास होता है। प्रत्येक देश की अपनी एक विशेष संस्कृति होती है। प्राचीन काल से भारत को एक समृद्ध संस्कृति मिली है। संस्कृति की आत्मा देश का महाकाव्य मानी जाती है। भारतीय संस्कृति की आत्मा दो विश्व विख्यात महाकाव्य है - रामायण और महाभारत। ये महाकाव्य शाश्वतता के प्रतीक हैं। ये कालजयी कृतियां हैं। संभवतः इसके समान प्राचीन और समृद्ध महाकाव्य विश्व के और किसी देश की संस्कृति में नहीं है।

रामायण में भारतीय जीवन के संपूर्ण चित्र हैं। इसके जीवन के साथ अंतरंगता, आत्मा के साथ अनन्यता, देश, काल, भूगाल, इतिहास, लोक जीवन आदि के साथ एकात्मकता प्रमाणित है। ये ऐसे महाकाव्य हैं जिन्हें न किसी परिभाषा में व्यक्त किया जा सकता है या न किसी दायरे में रखा जा सकता है। इनमें अनंत कथाऐं अनुस्यूत हैं, नाना प्रसंग जुड़े हैं। और इसके सभी तत्वों की प्रासंगिकता सभी कालों में होती है। इसकी व्याख्या का अंत नहीं है। तथ्य है जब तक मानव-सभ्यता धरातल पर विद्यमान रहेगी, तब तक यह भी स्वयं स्पूर्ण तथा अक्षुण्ण रहेगा।

आचार्यो ने दो कोटियों के महाकाव्यों का निरूपण किया है। (१) आलंकारिक महाकाव्य और (२) विकसित महाकाव्य। अलंकारप्रधान महाकाव्य काव्य-शास्त्रीय परंपरा में श्रेष्ठ कृति मानी जाती है। यह स्वभाव से तदवेत् ही रहता है। विकासशील महाकाव्य में कथा का विस्तार होता रहता है। मूल कथा को अक्षुण्ण रखते हुए युगानुकूल प्रवृत्तियाँ उसमें स्थापित होती हैं। जिससे काव्य की प्रासंगिकता बढ़ जाती है। रामायण और महाभारत की मूल कथा इतनी सशक्त प्रभावी संवेदनायुक्त तथा महान हैं कि उसमें परिवर्तन की संभावना होती ही नहीं। परिवर्द्धन हो सकता है। तात्पर्य यह है कि काव्य का सर्व प्रमुख तत्व उसकी शैली है। महाकाव्य की शैली उदात्त होती है। रामायण और महाभारत की उदात्त शैली के सामने विश्व के अन्य सभी महाकाव्य निष्प्रभ हो जाते हैं।

डिवाइन कमेडि या पैराडाइस लौस्ट आदि पाश्चात्य महाकाव्य भारतीय महाकाव्य के समान व्यापक जीवन की आदर्श नहीं कर पाते हैं। न उनकी कथावस्तु महान है और न इसका प्रकरण प्रभावी है। सृष्टि प्रकरण पर आधारित ये महाकाव्य शाश्वत्व को छूने का प्रयास भर करते हैं, लेकिन भारत में महाकाव्य की परंपरा उससे भिन्न है। महान कथा की असीमता भारतीय महाकाव्य में सबसे पहला परिचय हैं रामायण की कथा एक होते हुए भी भारतीय भाषाओं में लगभग उस पर आधारित हजारों काव्यों का सृजन हुआ है। उसी प्रकार भारत के विविध प्रसंगों पर हज़ारों काव्य लिखे जा चुके हैं। कथा के उपर्युक्त विकास को देखते हुए आचार्यो ने इन्हें विकासशील काव्य कहा है।

हिन्दी में काव्य सृजन का श्रीगणेश महाकाव्य से हुआ, ऐसा कहा जाय तो शायद ही अत्युक्ति होगी। आचार्यो ने महाकाव्य के लक्षणों का उल्लेख भी किया है। उसकी जितनी शर्त हैं उनका पालन करना जितना कठिन है उतना ही बहुआयामी है। महाकाव्य की कसौटी पर खरा उतरनेवाला विख्यात काव्य कवि चन्दरबरदाई का पृथ्वीराज रासो महाकाव्य है। यह शैलीप्रधान आलंकारिक काव्य है। इसमें दोनों काव्यात्मकता और उदात्तता उच्च कोटि की है। इसका नायक भी महाबीर है। महाकाव्य में चार प्रकार के नायक होते हैं। पृथ्वीराज में काव्यतत्व के सभी गुण विद्यमान हैं।

मध्यकाल का महाकाव्य गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस है। इसकी प्रबन्धात्मकता अद्भुत है, कथा संयोजन मौलिक है। शैली दोनों लोक और शिष्ट जनानुकूल उदात्त है। चरित्रों की योजना भी अभूतपूर्व है। इस महाकाव्य का नायक विश्व विद्वान है जिसमें तीन महान गुण हैं-शील, शक्ति और सौन्दर्य। यह गोस्वामीजी की रचनाशीलता की शाश्वतता को प्रतिपादित करता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में सृष्टि प्रकरण जैसी महान कथा वस्तु पर आधारित महाकाव्य कामायनी है। महाकवि जयशंकर प्रसाद की यह अंतिम काव्य कृति है। इसमें भारतीय महाकाव्य के कुछ तत्व मिलते हैं। महाकाव्य के भले ही सभी लक्षण न मिलते हों, पर शैली और अंक कल्पना की दृष्टि से यह एक महाकाव्य है। हिन्दी के आचार्यो ने इसे महाकाव्य की मान्यता निःसंकोच प्रदान कर ग्रंथ का गौरव बढ़ाया है। कामायनी की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसमें कथा की पूर्णता है और जीवन महाकाव्य के रूप में भरपूर उदात्त है।

हिन्दी महाकाव्य परंपरा में कुछ विद्वान महाकवि दिनकर के उर्वशी एवं कुरुक्षेत्र काव्यों को रखते हैं। किन्तु कथा, भाषा, शैली आदि की दृष्टियों से ये काव्य ही हैं। पुरुरवा और युधिष्ठिर दोनों धीर प्रशांत और दीर ललित नायक होने पर भी कथा महाकाव्यात्मक नहीं है अर्थात् व्यापकता का अभाव है। मध्य कालीन महाकाव्य के रूप में सूर सागर को भी कुछ लोग स्वीकार करते हैं और कई विद्वानों ने उसका सफल मूल्यांकन भी किया है। अस्तु, हिन्दी महाकाव्य की कोटि में हमारे विचार में उसे रखने से ग्रंथ का महत्व अवश्य बढ़ जाता है।

प्रस्तुत प्रसंग में एक बात उल्लेखनीय यह है कि उल्लिखित तीन प्रमुख हिन्दी महाकाव्य-पृथ्वीराज रासो, रामचरित मानस, कामायनी तीन कालों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्राचीनकाल की डींगल भाषा में पृथ्वीराज रासो की रचना हुई है। मध्यकाल की काव्य भाषा अवधी में मानस एवं बीसवीं शताब्दी के दूसरे-तीसरे दशक में स्वीकृत खड़ी बोली में कामायनी की रचना हुई है। समालोचकों के अनुसार आधुनिककाल में महाकाव्य रचना की संभावना नहीं रही। इसके कई कारण हैं। धीरे धीरे खण्ड काव्य की संभावना भी जाती रही। आधुनिक जीवन शैली, व्यवस्तता, आधुनिकता, आदि के कारण यह काव्य का गांभीर्य भी समाप्त हो गया है।

कविता रचना जीवन की आवश्यकताओं से अन्यतम है। अतः न कवियों की संख्या घटी है न कविता करना बन्द हुआ है। काव्य रचना के क्षेत्र में कई मतवादों का प्रवेश हुआ और कवियों का दायरा भी बढ़ा। आधुनिक जीवन में जहाँ एक ओर निःसंगता है, दूसरी ओर कवि विश्व नागरिक बन बैठा है। वह किसी सीमित दायरे या राष्ट्र का मामूली नागरिक नहीं है। उसके चिंतन का क्षितिज विशाल और व्यापक है। उसकी सोच वैश्विक है और वह जटिल संवेदनीयता से गुजरता है। इन सब के बावजूद महाकाव्य की संवेदना भी है और समानता आज भी है, इसे कदापि आस्वीकार नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न है, उल्लिखित महाकाव्य कब और कहां रचित हुए? बीसवीं शताब्दी में एक महाकाव्य रचित है और वह काशी में रचित है अर्थात् हिन्दी प्रदेश में। हिन्दी के विगत छह दर्शकों की अवधि में अपना क्षेत्र विस्तार करते हुए सारे देश को अपना लिया है। हिन्दी आज उत्तर प्रदेश या उत्तर भारत की भाषा नहीं है। देश के विभिन्न क्षेत्र में हिन्दी में मौलिक रचनाएँ हो रही हैं। हिन्दीतर भाषा-भाषी विद्वान, मौलिक रचना कर रहे हैं।

प्रस्तुत परिप्रेक्ष्य में हाल ही में एक महाकाव्य की रचना हुई है और वह भी हिन्दीतर भाषी केरल राज्य में। उसका नाम है - चिरंजीव महाकाव्य जिसके रचयिता हैं महाकवि डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर। प्रस्तुत महाकाव्य के प्रकाशन से यह साफ प्रमाणित हो रहा है कि एक युग की समाप्ति हो गई और दूसरे युग का प्रारंभ हो गया। एक मलयाली महाकवि द्वारा हिन्दीतर भाषी केरल राज्य में एक श्रेष्ठ हिन्दी महाकाव्य की रचना नवयुग का संदेश लेकर आयी है, इसमें संदेह नहीं है।

'चिरंजीव महाकाव्य' भारत के अन्यतम महाकाव्य महाभारत के एक श्लोक पर, आधारित है। उक्त महाकाव्य का बीज मंत्र है-

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च सप्तैते, चिरजीवनः
ये सात महामनीषी अमर हैं।

इन्हें मृत्यु स्पर्श नहीं कर सकी। वस्तुतः महाकाव्य, महाकाव्यों का महाकाव्य है। तात्पर्य यह है कि महाकाव्य का एक ही नायक होता है। कहा गया है - 'तत्रैको नायकः शूरः' किन्तु प्रस्तुत काव्य में सात नायक हैं, एवं प्रत्येक नायक सासंकृतिक भारत वर्ष का शूरवीर है। सात महानायकों के जीवन पर सात काव्य हैं। चूँकि सात प्रकरण अनुसूत्रित हैं। इन्हें सात सर्ग कहा जाय तो महाकाव्य की सर्वबद्धता सिद्ध हो जाती है। सर्ग बद्धो महाकाव्य यहाँ सार्थक हो जाता है। महाकवि ड़ॉ.नायर जी ने हनुमान प्रकरण को छः अध्यायों में विभाजित किया। इस प्रकार संख्या की दृष्टि से इसमें तेरह सर्ग हैं जो इसे महाकाव्य का स्वरूप प्रदान करते हैं और महाकाव्य चरितात्मक प्रबन्ध होने के कारण अधिक से अधिक पात्रों को समाविष्ट किया जाता है। प्रस्तुत काव्य में १७६ पात्रों का संदर्भ मिलता है। भारतीय काव्य, महाकाव्य, वेद, उपनिषद् तथा पुराणों में ये चरित्र अपा-अपना वर्चस्व बताए हुए हैं। उनका संस्मरण करना महाकाव्य की गरिमा है।

डॉ.नायर जी की सर्जनात्मकता और महाकाव्यीय संकल्पना अद्वितीय है। इतने सारे प्रसंगों का निर्वाह करना निःसन्देह दुःसह कार्य है, किन्तु डॉ.नायर जी ने अपनी परिणत आयु के परिपक्व अनुभव और कारयित्रीप्रतिभा द्वारा अत्यंत सफलतापूर्वक निर्वाह है। सब का जन्मवृत्तांत, व्यक्तितत्व, कृतित्व अनुभवजन्य विचार, प्रदेय आदि का अति उत्तम काव्यात्मक ढंग से संयोजन करना करई सामान्य बात नहीं है। प्रत्येक महान चरित्र के साथ उनका आत्मीय सरोकार अन्यत्र दुर्लभ है।

डॉ.नायर जी ने पूर्व पीठिका से महाकाव्य का श्रीगणेश करते हुए आगे आनेवाले संवाद का एक सुन्दर अनुभव प्रदान कर दिया है। काव्य का वातावरण तो बन जाता है, अपितु मानवता का मूल प्रश्न भी खड़ा हो जाता है - युद्ध और शांति यह महाभारत काल से असमाहित प्रश्न है। इससे महाकवि ने कहा है कि जो भी किया जाता है, जो भी होता है, उसके अंतराल में एक ही शान्ति है। शेष सभी निर्मित मात्र है।

एक ही विराट पुरुष श्रीकृषण विराज रहे हैं चिरजीव कथा में एक मात्र वे ही कथा नियामक एक मात्र वे ही शुभ पर्यवसायी

अंत में वह विश्वपुरुष घोषणा करते हैं

'मैं इस आर्ष भूमिका का आत्म तत्व हूँ ब्रह्म हूँ बना दूँगा अणु शक्ति का मानव मंगल रूप जगत को।''

यह सहना अनावश्यक है कि प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु पूर्णतः सांस्कृतिक है। डॉ.नायर जी ने अपनी महती प्रज्ञा की प्रेरणा से कथा का चयन किया है और प्रत्येक कथा के साथ सांस्कृतिकता का संबंध है। कवि ने अनेक सांस्कृतिक ग्रंथों का तात्विक अध्ययन करते हुए सार को ग्रहण किया है। उनको लम्बी सांस्कृतिक अंतर्यात्रा करनी

पड़ी है और मार्ग में उन्होंने महाभारत, श्रीमद भागवत्, महापुराण देवी भागवत, विष्णु पुराण, बाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, ब्रह्माण्ड पुराण, आदि पावन ग्रंथ - सागरों में अवगाहन करने का परम सुख पाया है। तात्पर्य यह है कि यह महाकाव्य भारतीय सांस्कृतिक वाङ्मय का निचोड़ है और यह महाकाव्य हमारी सांस्कृतिक चेतना को एक नया भावबोध प्रदान करता है।

चिरंजीव महाकाव्य की भाषा में एक ऐसा अवबोध है कि पाठक आसानी से रम जाता है। महाकाव्यात्मक भाषा में ही महाकाव्य लिखी जाता था। दिल उनका इसमें बखूबी निर्वाह हुआ है। संस्कृत एवं संस्कृतनिष्ठ भाषा इसकी परिनिर्वाहित भाषा है। विषयानुकूल भाषा काव्य को गरिमा प्रदान करती है। जहाँ एक छन्द का प्रश्न है, यह प्रभावी मुक्त गद्य छन्द में रचित है। निराला के समय से इस गद्य छन्द को प्रसिद्धि मिली है, क्योंकि इसमें अभिव्यक्ति सौंदर्य पर्याप्त है।

एक प्रश्न और है। प्रत्येक महाकाव्य के संदर्भ में दो प्रश्न उठाए जाते हैं 1. काव्य रचना का उद्देश्य क्या है अथवा यह काव्य विशेष समाज को क्या संदेश देता है? 2. महाकवि का अभिप्राय क्या है? यह सबको ज्ञात है कि महाकाव्य का उद्देश्य सदैव जन कल्याण है। यह 'सर्व जन हिताय' होता है। पहले कहा जा चुका है कि डॉ.नायर एक असाधारण साधक हैं। ऋषिप्रतिम डॉ.नायर का प्रत्येक कार्य सर्व जन हिताय होता है। उन्होंने महाकाव्य का अभीष्ट सब से पहले इंगित कर दिया है। अद्यतनता की प्रवृत्ति हिंसा, द्वेष और विनाश की ओर है।

यह युग अणुयुग कहलाता है। एक ओर हिंसक मानव के हाथ में अपराजेय विनाशक अणुशक्ति है जो संहार का आवाहन कर रही है और दूसरी ओर निरीह मानवता है। इस भयंकर अंतर्द्वन्द्व के समय अपनी संस्कृति, विरासत, इतिहास आदि की ओर ध्यान देना समय की माँग है। युद्धविहीन शान्ति की आकांक्षा और कामना करना इस महाकाव्य का उद्देश्य है। कवि ने प्राचीन वाङ्मय से महान जन नायकों को चुनकर एक आदर्श को स्थापना की है। वे उनकी प्रेरणा चाहते हैं।

आज कलियुग के अणुयुग में
भाव रुप में वे पुराण पुरुष
अंतर आया है विपुलाधिक
देखों यह अस्तित्व वे देते हैं।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में महाकवि सुमित्रा नन्दन पंत जी का 'लोकायतन' महाकाव्य प्रकाशित हुआ। प्रकाशन के पूर्व श्रद्धेय महाकवि पंत ने स्वयं शुरु से अंत तक स्थानीय (इलाहाबाद में) विद्धानों को काव्य पढ़कर सुनाया था। यह मेरा परम सौभाग्य है कि वहाँ मैं स्वयं भी एक श्रोता था। उक्त महाकाव्य का नायक अशरीरी लोक चेतना है जिसे महानायक कहा जा सकता है। प्रस्तुत काव्य में सात महानायक मिलते हैं। किंतु नियमानुसार एक ही नायक होना चाहिए। लोकायतन के आधार पर सोचा जाय तो चिरजीव महाकाव्य का भी एक ही सर्वमान्य नायक मेरे विचार में है वह है - भारतीय सांस्कृतिक चेतना।

अंततः परम आदरणीय डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी को सश्रद्ध नमन करता हूँ। उनका अवदान चिर स्मरणीय रहेगा। उनकी कृति अमर तो रहेगी ही, अपितु वे स्वयं भी चिरंजीवी होंगे, यही कामना है।

हिन्दी प्रोफेसर सेवा निवृत्त, आकाशवाणी मार्ग,
जगदा, राउरकेला, उडीसा-७६९०४२

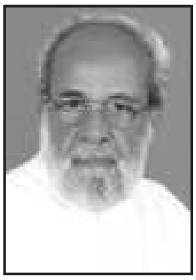

के.हि. साहित्य अकादमी का अध्यक्ष देशरत्न डॉ. चन्द्रशेखरन नायरजी का जन्मदिन समारोह २० दिसंबर २०१६ को अकादमी हॉल में मनाया जाएगा। उस अवसर पर नवनिकश के कानपुरवाले मुख्य संपादक डॉ. लक्ष्मीकान्त पान्टेय मुख्य अतिथि बनेंगे। संयुक्त संपादक डॉ.प्रमीला अवस्थी डॉ.चन्द्रशेखरन नायर विशेषांक के बारे में विस्तृत परिचय देंगी। के.हि.सा. अकादमी दोनों श्रेष्ठ संपादकों का आदर-सम्मान करेगी।

डॉ. महेन्द्र भटनागर मध्यप्रदेश के ग्वालियारवाले ९३ वर्ष के प्रसिद्ध कवि के सौ से अधिक कविताओं का मलयालम संग्रह डॉ.रविशैलम ने तैयार किया है। ग्रंथ की भूमिका समवयस्क डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी ने की है। डॉ.रंजित ने कहा है ग्रंथ का लोकार्पण निकट भविष्य में होगा।

प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद
(पूर्व राज्यपाल, त्रिपुरा)
Prof. Siddheshwar Prasad
(Former Governor, Tripura)
पूर्व केन्द्रीय मंत्री/Former Union Minister
President, World Peace Movement Trust

सत्यमेव जयते

Trust Office :
23-B, Lane-2, Mansarovar
Civil Lines, Meerut-250 001
India
Phone: 0091-121-4010831

दिनांक ....

दिनांक : २४/१०/२०१६

प्रिय डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी,

सुविख्यात भारतीय शिक्षाशास्त्री, रचनात्मक लेखक एवं पूर्व कुलपति डॉ.रवीन्द्रकुमार के हाथों भेजी गयी आपकी पाँच महत्वपूर्ण पुस्तकें प्राप्त हुई। आपका बहुत बहुत धन्यवाद। डॉ.रवीन्द्रकुमार जी ने आपके राष्ट्रीय कार्य, विशेषकर हिन्दी साहित्य में योगदान के सम्बन्ध में उल्लेख किया है। आपको अनेकानेक साधुवाद।

जैसा कि अपने दिनांकः २२/०८/२०१६ पत्र में आपको लिख ही चुका हूँ, डॉ.रवीन्द्रकुमार राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त विद्वान और लेखक हैं। गौतम बुद्ध और महात्मा गाँधी सहित महान भारतीयों के जीवन, कार्यों-विचारों, एवं भारतीय संस्कृति, सभ्यता, मूल्य-शिक्षा और इंडोलॉजी से संबंधित विषयों पर एक सौ से अधिक ग्रंथों का लेखन और संपादन कर चुके हैं। विश्व भर के विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों में सौहार्द और समन्वय को समर्पित भारतीय संस्कृति और सभ्यता, जीवन-मार्ग, गाँधी-दर्शन, उच्च मानवीय-मूल्यों, सामाजिक न्याय, समानता तथा युवा-वर्ग से जुड़े विषयों पर पाँच सौ से भी अधिक व्याख्यान दे चुके हैं। देश-विदेश की अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में सैकड़ों की संख्या में एकता, बंधुत्व, समन्वय-सौहार्द और सार्थक शिक्षा पर लेख लिखकर कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं। भारतीय विद्याभवन, मुम्बई से प्रकाशित होने वाले विश्व विख्यात भवनस जरनल में गत एक दशक के दौरान डॉ.रवीन्द्रकुमार ने लगभग एक सौ अतिउत्कृष्ट लेख उक्तवर्णित क्षेत्रों में लिखकर इतिहास रचा है। विश्व के अनेक देशों में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के अवसर पर शान्ति-यात्राओं को नेतृत्व प्रदान करके, तथा पिछले पच्चीस वर्षों की समयावधि में राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सौहार्द, शिक्षा, शान्ति और विकास, सार्वजनिक जीवन में नैतिकता और सदाचार और संस्कृति एवं मूल्य-शिक्षा जैसे विषयों पर निरन्तर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों व कार्यशालाऐं आयोजित कर स्वस्थ और प्रगतिशील समाज-निर्माण हेतु अभूतपूर्व योगदान दिया है। इस प्रकार, राष्ट्र के गौरव में अतिश्रेष्ठ वृद्धि की है। शिक्षा, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में अपने अभूतपूर्व योगदान की मान्यतास्वरुप बुद्धरत्न तथा गाँधीरत्न जैसे अन्तर्राष्ट्रीय, तथा पद्मश्री जैसे राष्ट्रीय सम्मान से भी डॉ.रवीन्द्रकुमार अलंकृत हैं।

भारतीय मार्ग, भारत और महात्मा गाँधी, गाँधीवादी अहिंसा सिद्धांत और व्यवहार में, बुद्ध की ओर, गौतम बुद्ध और धर्मपद, सभ्यता के मूलाधार, भारतीय संस्कृति के पांच हज़ार वर्ष, सनातन धर्म-वैदिक-हिन्दू जीवन-मार्ग और शान्ति की ओर डॉ.रवीन्द्रकुमार की सुविख्यात हिन्दी पुस्तकों में से हैं। यह सर्वथा उचित होगा, यदि डॉ.रवीन्द्र कुमार को संस्कृति, साहित्य और गाँधी-दर्शन के क्षेत्र में उनके अतिउत्कृष्ट कार्यों, विशेषकर हिन्दी साहित्य कोष में श्रेष्ठ श्रीवृद्धि और अद्धितीय योगदान की मान्यतास्वरुप आपकी संस्था द्वारा साहित्यकार और अग्रणीय विचारक के रूप में सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया जाएगा। डॉ.रवीन्द्रकुमार चूंकि एक महान और राश्ट्रवादी लेखक, साहित्यकार और विचारक हैं, उनके साहित्य सम्मान से स्वयं आपकी संस्था का गौरव बढेगा।

डॉ.रवीन्द्रकुमार के संक्षिप्त जीवनवृत्त की एक प्रति पुनःयोग्य कार्यवाही के लिए संलग्न है।

WORLD PEACE MOVEMENT TRUST MEERUT (U. P.)

आपका
(प्रोफेसर सिद्धेश्वर प्रसाद)

डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर
अध्यक्ष, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी
पोस्टः पट्टम पैलेस, तिरुवनन्तपुरम-695004 (केरल)

डॉ. पद्मश्री रवीन्द्रकुमार के अतिविशिष्ट तथा उल्लेखनीय राष्ट्रीय कार्य

प्रो.सिद्धेश्वर प्रसाद

डॉ. रवीन्द्र कुमार (जन्मः १जनवरी, १९५९) राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त विद्वान-भारतीय शिक्षाशास्त्री, रचनात्मक लेखक एवं चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के पूर्व कुलपति हैं। पिछले लगभग २५ वर्षों की समयावधि में लगभग एक सौ ग्रन्थों का लेखन-सम्पादन कर ड़ॉ.कुमार ने अतिविशिष्ट-उल्लेखनीय राष्ट्रसेवा की है। इन ग्रंथों में सत्तर से भी अधिक भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अतन्तिम चरण के, जिनकी परिणति स्वतंत्रता में हुई, अग्रिम पंक्ति के स्वाधीनता सेनानियों व महान राष्ट्रनिर्माताओं के जीवन-कार्यों को समेटते हैं। डॉ.कुमार ने यह भागीरथ राष्ट्रीय कार्य कहीं से भी किसी प्रकार के सहयोग-सहायता के बिना स्वयं अपने सीमित स्रोत्रों के बल पर किया है। डॉ.रवीन्द्र कुमार के अन्य कार्य सदाबहार भारतीय संस्कृति व सभ्यता, शिक्षा, गाँधीवादी दर्शन-अहिंसक मार्ग द्वारा समाधानार्थ महत्ता तथा देशकाल की परिस्थितियों की माँग के अनुसार शांति और सद्भाव संस्कृति के निर्माणार्थ प्रासंगिकता को, विशेष रुप से उजागर करते हैं। डॉ.कुमार के कुछ प्रमुख कार्य हैं: वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा सके पहलू, भारतीय संस्कृति के पाँच हजार वर्ष, सभ्यता के मूलाधार, भारत और महात्मा गाँधी, भारतीय मार्ग, अहिंसा और इसका दर्शन, धर्म और विश्व-शान्ति, शान्ति-दर्शन व्यवहार में, बुद्ध की ओर, शान्ति की ओर, गाँधीवादी अहिंसा का सिद्धान्त और व्यवहार इत्यादि। डॉ.रवीन्द्र कुमार के अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के कार्यों का हिन्दी एवं अंग्रेजी के अतिरिक्त स्पेनी, मराठी, थाई, तमिल, गुजराती तथा कन्नड़ आदि भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है।

डॉ.रवीन्द्र कुमार ने गत बीस वर्षों की समयावधि में भवनस् जरनल (मुम्बई), ब्रिसबन इण्डिया टाईम्स (आस्ट्रेलिया), बिजनेस इकनामिक्स (कोलकाता), ग्लोबल पीस (मेरठ), मिस्टिक इण्डिया (नई दिल्ली), वन-इण्डिया बन-प्युपल (मुंबई), सत्याग्रह (दरबन, दक्षिण अफ्रीका), सोशल आल्टरनेटिव (आस्ट्रेलिया), साउथ एशिया पालिटिक्स (नई दिल्ली) और गाँधीमार्ग (नई दिल्ली), आदि जैसी राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पत्रिकाओं के लिए भारतीय संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, इण्डोलोजी, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता, भ्रादृत्व, सहिष्णुता, समानता, स्वाधीनता और न्याय, समझ और सहयोग, परस्पर वार्ता के महत्व, जीवन-मार्ग तथा नैतिकता-सदाचार आधारित मूल्यों से जुड़े विभिन्न विषयों पर तीन सौ से भी अधिक लेख लिखे हैं।

भारतीय संस्कृति के एक अग्रदूत एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रोफेसर (आचार्य) के रुप में डॉ.रवीन्द्रकुमार ने विश्व के लगभग समस्त महाद्वीपों के एक सौ विश्वविद्यालयों अथवा उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थानों में, एवं चीनी गणराज्य के संसदीय परिसर सहित अन्य प्रसिद्ध मंचों पर भारतीय मार्ग और शान्ति-सम्बन्धी दृष्टिकोण, समाज तथा राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की भूमिका तथा योगदान, मूल्याधारित शिक्षा-अध्ययन शैली, सहयोग से समाधान और सामाजिक परिवर्तन जैसे अतिमहत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान दिए हैं। डॉ. कुमार ने १९९३ एवं २०१४ ईसवी के मध्य शिक्षा, शान्ति और विकास, शिक्षा और संस्कृति द्वारा सौहार्द और शान्ति-निर्माण में गाँधी दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता, मानवाधिकार, सार्वजनिक जीवन में नैतिकता तथा सदाचार, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता, अहिंसा और लोकतंत्र, अहिंसा एवं शान्ति-शिक्षा एवं धर्म तथा राजनीति आदि पर अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों का आयोजन और संचालन किया है। डॉ.कुमार के योग्य, समर्पित और कुशल नेतृत्व में १५-१६ मई, २०१० ईसवी को शिक्षा, शान्ति और विकास विषय पर मुम्बई में, ७-८ सितम्बर, २०१३ एवं ५-६ जुलाई, २०१४ ईसवी को, क्रमशः अहिंसा व शान्ति-शिक्षा तथा शिक्षा एवं संस्कृति द्वारा शान्ति व सौहार्द निर्माण विषयों पर श्रीधर विश्वविद्यालय, राजस्थान में सफलतापूर्वक आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ ऐतिहासिक रही हैं। भारत के समस्त भागों के साथ ही विश्व के सभी छः महाद्वीपों के तीस देशों के लोगों ने इन संगोष्ठियों में भागीदारी की। भागीदारीकर्ता सभी धर्म-सम्प्रदायों व मतों का प्रतिनिधित्व करने वाले रहे; वक्ताओं-प्रस्तुतकर्ताओं में समाजशास्त्री, धार्मिक विद्वान, शान्ति कार्यकर्ता और प्रसिद्ध गाँधीवादी विद्वान सम्मिलित रहे। एक व्यक्ति - डॉ.रवीन्द्रकुमार के प्रयासों से समान विचारधारकजन स्थानीय, क्षेत्रीय-राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर सौहार्द, शान्ति और एकता के लिए गहन विचार-विमर्श तथा कार्ययोजना के निर्माणार्थ साझे मंच पर आ सके।

डॉ.रवीन्द्र कुमार ने विशेषकर जैक्सनविल, फ्लोरिडा (संयुक्त राज्य अमरीका) तथा मैडलिन, कोलम्बिया (दक्षिम अमरीका) में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के अवसर पर, २ अक्तूबर, २००७ एवं २०१२ को, क्रमशः शांति-यात्राओं को नेतृत्व प्रदान कर ऐतिहासिक और भारत की प्रतिष्ठा मे अभूतपूर्व वृद्धि करने का कार्य किया है।

डॉ.रवीन्द्रकुमार के शिक्षा, साहित्य-सृजन और भारतीय संस्कृति-प्रचार के माध्यम से किए जा रहे राष्ट्रीय कार्य एकता, सौहार्द और

वैश्विक पटल पर हिन्दी

सुरेन्द्र गुप्त सीकर

मनुष्य जाति के मध्य भाषा मानव-वेदना, संवेदना और चेतना हेतु सेतु का कार्य करती है। यह सेतु अपनी भाषा से सहज सम्भाव्य है। एक समय था जब हिन्दी आत्म केन्द्रित सी थी परन्तु वर्तमान युग में हिन्दी वैश्विक शून्याकाश में अप्रतिम ऊँचाईयों पर उड़ान भर रही है। स्वतन्त्र और वृहद अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के कारण भी भाषाई प्रगति को अतीव महत्वपूर्ण सुनहरे अवसर प्राप्त हुये है।

वर्ष २०१५ में सम्पन्न विश्व हिन्दी सम्मेलन में वैश्विक संस्थानों ने सोशल मीडिया तथा डिजीटल संसार में हिन्दी का महोदघोष सुना और समझा है। आज हिन्दी उस स्थान पर है जहाँ स्वयं को सिद्ध करने हेतु हिन्दी को किसी सरकारी अथवा राजनीतिक प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं रह गई है। हिन्दी अपने स्वयं के ही सहज, स्वाकभावितक प्रचार-प्रसार एवं दम-खम के कारण अघोषित राष्ट्रभाषा के पद पर आ खड़ी हुई है। सभी सहयोगी व देशी विदेशी भाषाओं के अनिवार्य शब्दों को आत्मशांत करती हुई हिन्दी एक दिन विश्व पटल के बृहदतम भूभाग को अपना प्रियतम बना लेगी, ऐसा मुझे विश्वास हो रहा है।

तीव्र परिवर्तनो एवं चामत्कारिक उपलब्धियों वाली इक्कीसवीं सदी वैश्वीकरण का तूफान लेकर आयी है इस कारण भी विश्व में बहुप्रयोगीय, प्रभावी और समर्थ भाषाये ही अपना अस्तित्व बनाये रखने में सक्षम रह पायेगीं। अतः ये निर्विवाद सत्य है कि जो भाषायें इन्टरनेट, सम्प्यूटर लाइब्रेरी आदि में अपना अस्तित्व बनाये रखेगीं, उनकी प्रगति को कोई नहीं रोक सकेगा। हिन्दी के यथोचित संरक्षण, संवर्द्धन एवं वैकासिक संक्रमण के लिये हिन्दी साहित्यिक संगोष्ठियों में नितांत व अपरिहार्थ रूप से चिन्तन और विमर्श विशिष्ट महत्वपूर्ण है। हिन्दी देश का गौरव है, कला और सांस्कृतिक धरोहरों से सम्बद्ध है तथा देश की पहचान है। इसे अन्यान्य भारतीय भाषाओं के बहुप्रचलित शब्दों को आत्मशात कर और अधिक समृद्ध बनाना है। वैसे हिन्दी अर्तर्राष्ट्रीय धरातल पर विश्व की द्वितीय सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा का दर्जा पाकर सशक्त दस्तक दे चुकी है।

आंकड़े है कि वर्तमान समय में विश्व में एक सौ पचास करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते है। चालीस से अधिक देशों में छैः सौ से अधिक विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। अमेरिका में तीस से अधिक विश्वविद्यालयों में भाषाई पाठ्यक्रम में हिन्दी शामिल है। एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में बोली जाने वाली टॉप टेन भाषाओं में हिन्दी भी है और इसे बोलने वालों की संख्या साढ़े छैः लाख से अधिक है। जर्मनी के हीडल वर्ग, बान विश्वविद्यालय में भी हिन्दी पाठ्यक्रम में शामिल है। रूस के विश्वविद्यालय में काफी लम्बे समय से हिन्दी में शोध कार्य हो रहे है। जापान में हिन्दी का विशेष सम्मान है। वेस्ट इंडीज के कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी पीठ की स्थापना की गई है। मारिशश में तो हिन्दी सचिवालय ही है तथा अनगिनत हिन्दी पत्र पत्रिकाओं का हिन्दी में प्रकाशन हो रहा है। वैश्विक बाजार में भारत के बढ़ते कदमों से निश्चय ही हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार और भी बढेगा।

हिन्दी हमारी अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। हिन्दी भारतीय संस्कृति एवं चिन्तन की संवाहिका है। हिन्दी हमारे पारम्परिक और पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन संस्कृति एवं आधुनिक सभ्यता का मिश्रित स्वरूप है। भाषा संस्कारों का संवहन करती है। हिन्दी आज केवल समग्र भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व की ओर अपने कदम बढ़ा चली है। अन्यान्य भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य के हिन्दी अनुवाद और रूसी, जर्कमनी, चीनी, जापानी, फ्रेंच आदि सम्मुनत भाषाओं के साहित्य का आदान प्रदान भी हमारी भाषा की सफलता का प्रयास है। सोचनीय एवं विचारणीय यह है कि एक ओर जहां हम हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता हेतु आशान्वित हो रहे है वहीं उसकी आन्तरिक सुदृढ़ता के लिये सरकारी काम-काजों में उसकी अनिवार्यता के प्रती उदासीन है। इस पर दृढ़ता और गम्भीरता से विचार एवं गहन क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

देश की अखण्डता के लिए उल्लेखनीय योगदान करते हैं; वे सद्भाव और राष्ट्रीय एकता के निर्माण, सांस्कृतिक मूल्यों और शान्ति के विकास हेतु श्रेष्ठ प्रयासों को प्रकट करते हैं। धर्म-सम्प्रदायों, वर्गों व मतों के मध्य समानता, समझ तथा एकता का खुलासा करते हैं; सामाजिक सुधार एवं परिवर्तन की वास्तविकता की महत्ता और जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता को समझने का आह्वान करते हैं। डॉ.रवीन्द्र कुमार की उल्लेखनीय राष्ट्रीय सेवाओं का परिचय कराते हैं। साहित्य, शिक्षा और सांस्कृति प्रसार-प्रचार के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और सद्भाव निर्माण के लिए किए गए अतिश्रेष्ठ कार्यों के लिए डॉ.रवीन्द्र कुमार विशेष रूप से उत्तर प्रदेश-रत्न, बुद्ध-रत्न, शिक्षा-रत्न और समाज-रत्न के साथ ही वर्ष २००१ ईसवी में पद्मश्री से भी सम्मानित किए गए हैं।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री, ट्रस्ट ऑफीस, २३बी, लाईन २, मानसरोवर, सिविल लाइनस, मीरट २५०००१

प्रख्यात साहित्य मनीषी एवं हिन्दी सेवी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के साथ डॉ.एस.रज़िया बेगम की बातचीत

गैर हिन्दी परिवेश में जन्म और शिक्षा-दीक्षा के बावजूद आप में हिन्दी के प्रति अनुराग कब और कैसे हुआ?

मैं मध्य तिरुवितांकोर के शास्तामकोट्टा नामक गाँव में पैदा हुआ ग्रामीण बालक था। माता-पिता सामान्य शिक्षा प्राप्त किसान परिवार के थे। शास्तामकोट्टा मलयालम स्कूल से १५ वर्ष की अवस्था में ७वाँ दर्जा पास किया। दो वर्ष बाद हमारे गाँव से १२ मील दूरी पर के राघवन नामक एक हिन्दी प्रचारक हमारे गाँव आये, हिन्दी पढ़ाने लगे। हिन्दी भाषा के साथ हमारे देश का सच्चा संबंध उन्होंने समझाया, गाँधीजी के संदेश को सुनाया कि हिन्दी पढ़ना-पढ़ाना देश सेवा है। गाँधीजी के प्रति अमित आकर्षण रहा था। देश की जनका गाँधीजी का आदर करती है। अंग्रेजी यजमानत्व को निर्मूल करने में हिन्दी भाषा और स्वदेशी चीजों को अपनाना एक मार्ग है।

यही भाव साफ-साफ मालूम हुआ। तभी युवत्व का उस ओर जाने की उन्मुखता तीव्र हो गयी। हिन्दी पढ़ने लगा, बिलकुल एक अजनबी भाषा। उसे पढ़ने से उस समय किसी प्रकार की लाभकारी बात दूसरी नहीं थी। पर आशंका मौजूद थी की अंग्रेजी सरकार की दृष्टि में हिन्दी पढ़ना एक प्रकार से देशद्रोह था। हमारे गाँव के लोग नहीं जानते थे कि हिन्दी क्या चीज है। व्यर्थ समय गंवा देने का एक फिजूर कार्य। देश के प्रति प्रेम अथवा कर्तव्य इस प्रकारके आशय से सर्वथा मुक्त। इस सर्वथा विपरीत परिस्थिति में हिन्दी पढ़ी। विरोध संघर्ष हुआ। मास्टर को मारने का कार्य-क्रम चला था।

आपने स्वतंत्रता आंदोलन देखा है, पराधीन भारत की आँखों में तब क्या सपने थे?

पराधीनता मरने से भी बढ़कर अशुभकारी है। अंग्रेजी शासन की स्थिति उससे भी कठोर अनुभव थी। गाँधीजी ने अहिंसात्मक आंदोलन अपनाया। एक नया एवं बिलकुल अनोखा युद्ध संकल्प। बात तो सही थी। पर वह दुर्बल एवं बेपरवाह का रास्ता नहीं। पर, भारतीय जनता गाँधीजी के विचारों और समरमार्ग से तन-मन से कष्ट-सहिष्णु बनी थी। फिर भी उनके अनुयायी होकर रहने में हिचकती नहीं थी। स्वाधीन होने की उत्कट अभिलाषा के कारण वे महात्मा पर अपना जीवन समर्पित करते रहे। इस दिशा में हिन्दी पठन और प्रचरण भी पूरे उत्साह से चला।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन ने युवा चंद्रशेखरन नायर के मन को किस प्रकार प्रभावित किया था?

चन्द्रशेखरन नायर ने जिस उद्देश्य के बल पर हिन्दी को अपनाया था वह देश के प्रति कर्तव्य निर्वहण के पक्ष में था। देशीय संस्कृति पर आस्था बनाये रखना और धार्मिक एवं पौराणिक ग्रंथों के पठन और उनके भावों को जीवन और विचारों में लगाये रखने की स्थिति तक सोलह वर्ष की अवस्था तक पहुँच चुका था। अध्यात्म रामायण का अध्ययन एवं पाठ करीब सौ से ज्यादा आवर्तन कर चुका था। को्ई न कोई कविताएं भी लिखने का साहस कर चुका था। गाँधीजी से पूरा भक्ति भाव रहा था। स्वदेशी चीजों पर आश्रित रहने का व्रत किया। खादी पहनना शुरु किया और इसका प्रचार भी करने लगा था। खादी भण्डार से स्वीकार कर बाहर बेंचने लगा था। शाकाहार का आदी हो गया। तकली पर से सूत निकालता और चरखा खरीदा, उसका उपयोग करता। इस प्रकार तत्कालीन गाँधी विचारधारा का पक्का कायल बना रहा।

स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात से वर्तमान तक भारत की सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य में क्या परिवर्तन देखते और महसूस करते हैं?

स्वतंत्रतापूर्व भारत की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में हुए परिवर्तन का अंदाजा करना एक महा निबंध का कार्यवृत है। संक्षेप में याने दो चार शब्दों में ही यहाँ बताना उचित मालूम होता है। वस्तुतः भारतीय समाज व्यवस्था, राजनीति अब तक की प्रोन्नति आदि स्वाधीनता के पश्चात् ही आगे बढ़ी है। अनेकों वर्ष की पराधीनता में रही जनता स्वातंत्र्य पाकर यद्यपि प्रसन्न हो फिर भी असंख्य आंतरिक झमेलों में फँसी हुई रही थी।

हिन्दी-मुस्लिम संघर्ष का सामना करना पड़ा। देश के भीतर के स्वतंत्र राज्यों को देशीय धारा में लाकना था। देश की संपत्ति सारी विदेश गई हुई थी। दरिद्रता को पाटना था। बँटवारे के साथ हुए सामाजिक एवं मजहबी संघर्षों का निबटारा भी करना था। साथ ही

अंत में मैं ये कह सकता हूँ कि,

भारत की आन, बान, शान, ज्ञान है हिन्दी;
भारत का रचाभिमान है श्रभिमान है हिन्दी;
भारत में रहने वाला किसी जाति, धर्म का;
हिन्दू है, उसकी जान है, पहिचान है हिन्दी।।

४३, नौबस्ता, हमीरपुर रोड, कानपुर २०८०२१

नये संविधान के साथ देशीय सरकार की स्थापना भी करनकी थी। इन अनंत समस्याओं के बीच देश सचमुच का दम घुट रहा था। इन्हीं दुविधाओं के बीच गाँधीजी का शहीद होना भी एक ज्वलंत प्रश्न था। आश्चर्य की बात है, ऐसी एक मर्मभेदी परिस्थिति में भी भारत का स्वतंत्र शासन कायम रहा। नये सिरे से प्रत्येक प्रश्न का प्रत्येक सवाल का उचित जवाब देना हमारे लिए कठोर परिश्रम का कार्य था।

देश का नियम बना। नियम के मुताबिक शासन की व्यवस्था हुई। कन्याकुमारी से लेकर काश्मीर तक का स्वतंत्र भारत सरकार बनी। इसके सहायक होकर असंख्य नियमज्ञ सामने आए। असंख्य शक्तिशाली व्यक्तित्व सामने उपस्थिति हुए तभी भारत सरकार का स्थापत्य बन सका। फिर भी, पराधीनता में से परिचित विद्वानों में विभिन्न आशायों का आविर्भाव हुआ। राजनैतिक दल बंदी के आविर्भाव से देश के सच्चे हितांक्षियों में वैषम्य की अवधारणा स्थाई होकर बन गई। जनता भारत की हैष लेकिन विश्वास परदेशों और परधर्मी से है। इन विरुद्ध भावों का संघर्ष ही आज लोकसभा एवं राज्यसभा में बराबर होते रहते हैं। हम अपने संविधान के अनुपालन में अक्षम एवं असमर्थ हो चुके हैं। बार-बार शासनों का बदलना हमारा स्थाई स्वभाव हो चुका है। फलतः देश की समग्र प्रोन्नति में हम सफल नहीं बनते हैं। आजकल सम्मिलित दलों की सरकार हमारे लिए स्वाधीनता के विघटन का स्वरुप ही दर्शाता है।

आपने किस प्रेरणा से हिन्दी प्रचार का कार्य प्रारंभ किया?

मैंने जब हिन्दी पढ़ी तब स्वयं को नहीं देखा था बल्कि देश को देखा था। इस रास्ते के मार्गदर्शक रहे थे महात्मा गाँधी।

हिन्दी प्रचार-प्रसार के क्रम में आपने गाँव तक में प्रचार कार्य किया, आपने भारतीय ग्रामीण समाज को नजदीक से देखा है, आजादी के बाद से ग्रामीण समाज अब तक कितना बदला है?

चार-पाँच वर्ष तक याने बीस वर्ष की उम्र तक हिन्दी का प्रचरण कार्य किया। घर के आसपास के गाँवों तक मेरा कार्य क्षेत्र रहा था। वयस्क स्त्री-पुरुषों को भी हिन्दी के अभ्यास से प्रबुद्ध कर दिया और इस रास्ते से गुरु-शिष्य संबंध में सद्भाव, स्नेह, सौमनस्य और सौहार्द्र का लय विराज रहा था। हिन्दी को माध्यम से मुख्य धारा रही थी देश और उसकी संस्कृति की सुरक्षा। आज आँखों के सामने आशातीत अद्भुत परिवर्तन ग्रामीण समाज में आ चुके हैं। एक समय था जब कि गाँव-जनपद अपने पैरों से शहर तक जाते रहे थे। इस प्रकार होकर असंख्य गाँव छोटे बन गए और शहर बढ़ते गए, आबाद होते रहे। आज अख़बारों मोबाइलों, टी.वी., कम्प्यूटर, लापटॉप आदि नवीनतम अलंकृत संपत्तियों के द्वारा जनपद और शहर में कोई अंतर ही नहीं रह चुका है। दस वर्ष की बालिका भी अपने हाथ के मोबाइल से दुनिया भर के साथ संपर्क स्थापित करती है और अपने जवान आयु की पहचान करती है।

आजादी के समय के नेता और आज के नेता में क्या फर्क देख़ते हैं?

आजादी के और आज के नेताओं में अंतर तो अवश्य है, फिर भी नेताओं का होना भी एक अपेक्षित कार्य तो है। पंडित जवाहरलाल नेहरु, डॉ.राजेन्द्र प्रसाद, भुलाभाई देशाई, मदनमोहन मालवीय जी, पंजाब केसरी, सरदार बल्लभभाई पटेल, बालगंगाधर तिलक, दादाभाई नौरोजी, सुभाषचन्द्र बोस, इन्दिरा गाँधीजी, डॉ.अंबेदकर, रानी लक्ष्मीबाई, ई.एम.एस. नंबूतिरिपाड्, ई.के.नायनार, श्री.पट्टमनायक पिल्लै जैसे मेधावी राजपुरुष आज नहीं है, फिर भी आज भारत के शासन की बगडोर हाथ में लिए आदरणीय सोनिया जी, सर्वश्री मनमोहन सिंह जी, वाजपेयी जी, आडवाणी जी, मोदी जी जैसे देशीय नेताओं का स्थान गौण नहीं है। प्रत्येक दल का अपना अस्तित्व और आदर्श होता है।

आपके साहित्य कार्य पर राजनैतिक विचारधारा का कितना प्रभाव पड़ा?

मेरा साहित्य अत्यधिक विस्तृत एवं व्यापक धरातल पर आधारित है। मेरी कविताओं, नाटकों, कहानियों, उपन्यास, निबंधों, समीक्षाओं का संतुलन राजनैतिक गतिविधियों के तुला पर जुड़ा हुआ है। यह एक विस्तृत प्रबंध का विषय है। उत्तर के अनेक मूर्धन्य साहित्यकार मेरे साहित्य की तुलना उत्तर के राजनैतिक चित्रणों के अधिकारी एवं राजनैतिक साहित्यकारोकं के साथ की है। एक उदाहरण से इस प्रश्न का समाधान यहाँ अंकित होता है। मेरठ के डॉ.नत्थन सिंह ने मेरे जीवनी का नाम केरलीय प्रेमचंद डॉ.एन.चन्द्रशेख़रन नायर दिया है।

साहित्य सृजन के लिए एक लेख़क को किन चीजों के प्रति प्रतिबद्ध या जवाबदेह होना चाहिए?

साहित्य जन का हितहारी है। माने, साहित्य मानव का होना चाहिए, मानव के लिए होना चाहिए। इस अर्थ में साहित्यकार को अपने आसपास के जीवन को संपूर्ण दृष्टि से देख़ने का सद्भाव जितना हो उतना ही अपने राष्ट्र के समग्र उन्नयन पर भी होना चाहिए।

किस हिन्दी साहित्यकार का प्रभाव आपके मन पर सबसे ज्यादा पड़ा?

प्रारंभिक दशा में कबीरदास का प्रभाव इतने ठोस रूप से पड़ा था कि मैं सुप्रसिद्ध देवालय के सामने भी हाथ नहीं उठाता था कि मैं सुप्रसिद्ध देवालय के सामने भी हाथ नहीं उठाता था। जबकि कबीरदास का वचनं था "तेरा साई तुझमें ज्यों पुहुपन में बास"

हिन्दी पत्रकारिता की दिशा और दशा

राजेन्द्र परदेसी

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व पत्रकारिता जन-जागृति और स्वतंत्रता के संघर्ष को गति प्रदान करने का साधन था। समाचार पत्रों के प्रकाशकों और संपादकों का एक पैर जेल में रहता था और दूसरा पैर बाहर। राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, महामना मदनमोहन मालवीय, बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पं.पद्मकान्त मालवीय, पं.अम्बिका प्रसाद बाजपेयी, श्री.मूलचन्द अग्रवाल, श्री. शिवपूजन सहाय, पं.बनारसी दास चतुर्वेदी, श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर, महात्मा गांधी, श्री. गणेश शंकर विद्यार्थी, पं.रमाशंकर अवस्थी, पं. रमाशंकर त्रिपाठी, पं. द्वारका प्रसाद मिश्र प्रभृति महापुरुषों ने पत्रकारिता के माध्यम से जनमानस को शिक्षित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। पत्रकारिता को चरित्र निर्माण और जन जागरण का हथियार बनाया। परन्तु आज भौतिकता की चमक-दमक में वही हथियार कुंद होता जा रहा है।

१७ मई, १८७८ को कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले 'भारत मित्र' के प्रथम अंक के प्रथम सम्पादकीय में पत्रकारिता के महत्त्व को इस प्रकार रेखांकित किया है-

'समाचार पत्रों से जो उपकार होता है... इस विषय में बहोत लिखने का कुछ प्रयोजन नहीं है, क्योंकि जबतक जिस देश में, जिस भाषा में और जिस समाज में समाचार पत्र का चलन नहीं हैं, तब तक उसकी उन्नति की आशा भी दुराशामात्र है... समाचार पत्र प्रजा का प्रतिनिधि स्वरूप होता है और मुख्य तो हृदय संस्कार करने को जैसा ये समर्थ है वैसा तो कोई भी नहीं है'।

प्रख्यात साहित्य मनीषी एवं हिन्दी सेवी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के साथ डॉ.एस.रजिसा बेगम की बातचीत....

उसका प्रभाव आज भी मुझ पर है। पर उसका आश्रय भगवत्गीता और उपनिषद हैं।

हिन्दी के अलावा अन्य किसी साहित्यकार ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया? आपकी प्रिय पुस्तक कौन सी है?

भगवान व्यासदेव और कवींद्र रवींद्रनाथ ठाकुर मेरे लिए गुरु तुल्य रहे थे। मैंने उनपर गद्य कवितायें एवं लेख अनेक लिखे।

आप की प्रिया विद्या कौन-सी है?

मेरे लिए सभी विधायें प्रिय एवं सुगम हैं। काव्य भी काफी लिख चुका हूँ। महाकाव्य भी उसमें आता है। हिन्दी और मलयालम में थी। मेरे परिचित और प्रभावित साहित्यकारों के अभिमत में मैं नाट्य रचनाकार हूँ। मुख्यतः कहानियाँ और उपन्यास लिखना मेरे लिए आंद का विषय है। लेकिन अनुभव से बता सकता हूँ कि मैंने लाखों पृष्ठों पर का शोध कार्य किया है।

आपने सभी विधाओं में समान अधिकार से लिखा है, किंतु आपके नाटक अधिक लोकप्रिय रहे क्या कारण हैं?

आपने सही कहा है कि मैंने सभी विधाओं में समान अधिकार से लिखा है। इसका यही कारण है कि मेरी नाट्य रचना देवयानी, द्विवेणी, सेवाश्रम, भगवान बुद्ध आदि अनेक नाटक ऐसे प्रस्तुत हुए जिन पर असंख्य आधिकारिक जनों ने चर्चा-परिचर्चा की है और वह हिन्दी साहित्य के समग्र मंडल में परिव्याप्त हो चुका है। विधापरक भाषाओं के प्रयोगों में मुझे कोई अक्षमता कभी महसूस नहीं हुई है।

इस उम्र में भी सतत् सक्रिय रहने के लिए आपको किन चीजों से प्रेरणा और ऊर्जा मिलती है?

मुझे इस प्रश्न का क्या उत्तर देना पड़ रहा है। बालपन से ही मुझपर दैवी कृपा का प्रभाव अनुभव हुआ है। पराशक्ति श्री मूकांबिका देवी ने जो कृपा मुझ पर सौंप दी है उसका स्मरण करने मात्र से मन में अविरल आनंद का अनुभव हो रहा है। इस नवति की अवस्था में भी मेरी कलम चलाने में उनके असीम कारुण्य का अवबोध दर्शित होता है। तीन महीने के पहले संपूज्य ग्रंथ श्रीमद्भागवतम एकादश स्कन्धम (मुक्तिस्कंधम) का मलयालम गद्यानुवाद धूमधाम से प्रकाशित कराया अनेक विद्वानों की उपस्थिति में। लेकिन देवी की सत्प्रेरणा जैसी लगती है कि निकट भविष्य में भी कुछ लिखूँ और प्रकाशित करूँ।

दक्षिण भारत में हिन्दी के इतने प्रचार के बावजूद आम आदमी में हिन्दी बोली य़और समझी जानेवाली भाषा के रुप में स्थान न बना सकी इसका क्या कारण है?

यह धारणा है कि दक्षिम में हिन्दी अधिक नहीं जानी जाती। यह धारणा निर्मूल है। हिन्दी जाननेवाले लोगों की संख्या आज उत्तर भारत से ज्यादा दक्षिण में है। जैसे केरल में ही देखिए, जितने शिक्षित लोग हैं याने कॉलेजीय शिक्षा से अभ्यस्त हैं उनमें 80% जन हिन्दी जानते हैं। क्योंकि स्कूल में हिन्दी सालांत परीक्षा तक अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है। तमिलनाजू में भी हिन्दी की पढ़ाई स्कूलों और कॉलेजों में भी चलती है। असंख्य अकादमियों की कार्यशीलता चालू है। •

देश के स्वाधीन होने के पूर्व के समाचार पत्र भारतीय जनता के मन-प्राणों में राष्ट्रीय चेतना के संस्कार आरोपित करने के मिशन से सतत सम्बद्ध रहे। इसके लिए उनके संपादको को कष्ट भी उठाने पड़े। वे अंग्रेजी शासन के कोप भाजन बनते रहे। उनसे जनामनत मांगी जाती रही। न देने पर समाचार पत्र को बन्द करने को विवश भी होना पड़ता था। समाज को संस्कारिता करने समाज एवं राष्ट्र को समर्पित होने का पावन मिशन स्वतंत्रता के पश्चात् समाप्त प्राय हो सा गया। आज पत्रकारिता दिगभ्रमित है। उसके सम्मुख कोई सार्वभौमिक मिशन नहीं है। मिशन है भी तो खण्डित और अल्पजीवी। बाजारवादी युग में व्यवहार, व्यवस्था या क्तिगत स्वार्थ रहले आ गया है, फिर भावनाएँ ऐसे में पत्रकारिता भी एक लाभकारी प्रोफेशन के रूप में पढ़े लिखे लोगों के सम्मुख प्रकट हुआ है।

भारतीय मनीषा स्थापित मूल्यों को खण्डित होते या अपसंस्कृति से समाज को प्रभावित सहजता से देख नहीं पाती। वह द्रवित होती है। क्योंकि मूल्यो से वह बहुत अपेक्षाएँ रखती है। इसी कारण वह वर्तमान पत्रकारिता का बदलाव स्वरूप देखकर दुःखी होती है। ऐसी दशा में पत्रकारिता से अपेक्षा की जाती है कि वह जीवन मूल्यों की अक्षुणता के प्रति सतत सचेष्ट रहे।

पत्रकारिता के वर्तमान स्वरूप के पीछे व्यावसायिकता के प्रति आग्रह है। स्वतंत्रता के पूर्व अखबार निकालना व्यवसाय था और नहीं भी था। उसके अधिकांश संचालक उससे भौतिक लाभ अर्जित करने के प्रति उदासीन रहा करते थे। वे साधनारत रहा करते थे। वास्तव में वह पत्रकार ही थे। इसी कारण वे विद्वानों का समादर करते थे। उनके विचार एवं सम्मति को उच्च प्राथमिकता देते थे। परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त पत्रकारिता के क्षेत्र का व्यावसायिककरण हो गया। भावनाओं का लोप हो गया। पत्रकार से लेकर संचालक तक किसी-न-किसी गुट का साथ पकड़कर राजनीतिक संरक्षण प्राप्तकर आर्थिक लाभ उठाने लगे। इसका नतीजा यह हुआ कि समाचारों की तथ्यपुरकता का स्थान पक्षपातपूर्ण प्रशस्ति गान ने लिया।

आज अधिकांश समाचार पत्र किसी न किसी बड़े औद्योगिक घराने या व्यवसायी-राजनीतिज्ञ द्वारा संचालित होने के कारण जनमानस की प्रतिबद्धता से हट गये हैं। पत्र के समाचारों का चयन जन जागरण और जन समस्याओं से हटकर अपने मालिकों के हित को पोषित करना आधार होता है। जिसके कारण पत्रकारिता की गौरवशाली अनुकरणीय परम्परा समाप्त हो गयी है।

समाचार पत्रों के सम्पादक इसी कारण अपने पत्रों का सम्पादन कार्य भूलकर उसको चलाने का प्रबंधन देखने लगे है। इसके कारण पत्रकारिता का उद्देश्य ही बदल गया। पत्रों में समाजोपयोगी समाचार और साहित्य के स्थान पर सम्पादक अपनके व्यावसायिक घरानों के हित की सामग्री परोसने लगे हैं। अधिकाधिक आय हेतु विज्ञापनों को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसी दशा में उनका निष्पक्ष रह पाना कठिन हो गया है।

पत्रकारिता का मूल उद्देश्य है सूचना, ज्ञान और मनोरंजन प्रदान करना। किसी समाचार पत्र को जीवित रखने के लिए उसमें प्राण होना आवश्यक है। पत्र का प्राण होता है विज्ञापन, लेकिन बढ़ते बाजारवाद और आपसी प्रतिस्पर्द्धा के कारण विज्ञापन इतना महत्वपूर्ण हो गया है कि पत्रकारिता का वास्तविक स्वरूप ही बदल डाला। राष्ट्रीय स्तर के समाचारों के लिए सुरक्षित पत्रों के प्रथम पृष्ट पर भी अर्द्धनग्न चित्र विज्ञापनों के साथ आ गये है।

समाचार पत्रों का सम्पादकीय जो समाज के बौद्धिक वर्ग की उद्वेलित करती थी जिनसे जनमानस भी प्रभावित होता था। आज अपने प्रतिद्वन्दी को नीचा दिखाने में उपयोग किया जा रहा है, जिसने पत्रकारिता के गिरते स्तर और उसकी दिशा को लेकर अनेक सवाल खड़े कर दिये है।

इधर इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रभाव ने समाचार पत्रों को भी सत्य के नाम पर इतनी तेजी से दौड़ा दिया है कि समाचार संवाहक को स्वयं ही समाचार सर्जक बना दिया है। फिल्म अभिनेत्रियों की शादी और रोमांस के सम्मुख आम महिलाओं की मौलिक समस्याएँ, उनके रोजगा, स्वास्थ्य उनके ऊपर होने वाले अत्याचार का स्थान नहीं पा पाता। यदि होता है तो बेमव, केवल दिखाने के लिए।

पत्रकारिता का इतिहास देखों तो हम पाते हैं कि पत्रकारिता सदैव समाज के आम आदमी से जुड़ी रही है। वर्तमान में बाजार के प्रभाव ने उसे भी प्रभावित कर लिया। जिसके कारण उसके लिए सामाजिक हित का समाचार गौण हो गया। आदमी की प्राथमिकता बदलने लगी है। उसकी सोंच में भी बदलाव आने लगा है। पहले जहाँ बाजार समाज के अनुसार लगता था आज वही समाज बाजार के अनुसार चलने लगा है। इसके पीछे बाजारवादी पत्रकारिता का बड़ा हाथ है।

वैश्वीकरण ने भी आज की पत्रकारिता को काफी प्रभावित किया है। सभी समाचार पत्र अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय समाचारों के बीच झूलने लगे है। एक और विदेशी पत्रकारित की नकल कर आज अधिकांश पत्र सनसनी तथा उत्तेजना पैदा करने वाले समाचारों को सचित्र छापने के दौड़ में जुटे है। इन्टरनेट से संकलित समाचार कच्चे माल के रूप में जहाँ इन्हें सहजता से मिल जा रहा है, वहीं, प्राद्योगिकी का उपयोग कर अनेक संस्करण निकालकर अपने पत्रों को क्षेत्रीय रूप दे रहे हैं, जिसके कारण पत्रकारिता का सार्वभौमिक स्वर ही विलीन होने लगा है।

पत्रकारिता के कुछ विशेषज्ञ इसके लिए इलेक्ट्रानिक मीडिया को

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की कहानियों में सामाजिक चेतना

प्रो.डॉ.पंडित बन्ने

डॉ. नायर जी अहिंदी भाषी है। लेकिन हिन्दी भाषा तथा साहित्य की प्राणधारा को उन्होंने गहराई से आत्मसात किया है। भारतीय संस्कृति के प्रति उनके मन में गहरी आस्था है। डॉ.नायर जी का कथा साहित्य एक निश्चित उद्देश्य लिए पाठकों में भारतीय संस्कृति की गूँज स्पंदित करने में प्रयासरत है। साहित्य और कला दोनों की धुरी में भारतीय संस्कृति के पहिये लगाकर डॉ.नायर जी ने आदर्शमय जीवन को गति देने का उदार यत्न किया है। उनके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है भारत की आध्यात्मिक परंपरा एवं चिरंतन मानवीय मूल्यों का वैज्ञानिक युग की पृष्ठभूमि है प्रतिस्थापना। भारतीय चिर पुरातन संस्कृति के महान आदर्श, त्यागमय भोग, नारी की दिव्यता, अनेकता में एकता आदि उनके साहित्य में अनुस्यूत है। पौराणिक पात्रों के साथ-साथ आम व्यक्ति के यथार्थ जीवन को भी डॉ.नायर जी ने अपने साहित्य का अंग बनाया है। कहानीकार नायर जी काफी आशावादी प्रतीत है। साथ ही सामाजिक संदर्भों के द्रष्टा भी है। हमारी संस्कृति की समाज सापेक्ष्य यथार्थ समसायिकता के आधार पर उन्होंने कहानियों के द्वारा स्पष्ट किया है।

'हार की जीत' कहानी का मायादेवी भारतीय आदर्शों की प्रतिमूर्ति है। भारतीय नारी के व्यक्तित्व के उजागर करनेवाली मायादेवी अपने व्यक्तित्व की गरिमा से अपनी हार को जीत में परिणत कर देती है। अपनी पत्नी मायादेवी को कवि सुश्री की कविताओं की ओर विशेषतः उन्मुख देखकर उनका मन शंकाग्रस्त हो उठता है। अपनी पत्नी से बिना कुछ कहे उसे छोडकर चला जाता है। राजा द्वारा की गई अग्नि परीक्षा में रानी सफल होकर अपनी प्रतिष्ठा को प्रमाणित करती है जो भारतीय नारी की पहचान है। पति के प्रति उसकी निष्ठा उसके कथन से व्यक्त है - "महाराज तो मेरे लिए परमेश्वर सदृश्य है। इस उम्र में उनके अतिरिक्त और किसी की छाया तक मेरे हृदय में नहीं पड़ी है। पुण्य से ही वे मुझे प्राणनाथ के रूप में मिल गये पर आज वह अस्वस्थ हैं, यह मैं कैसे देख सकूँगी।" (हार की जीत-डॉ.नायर, पृ.२८-२९).

इस अग्नि परीक्षा में रानी सफल होकर अपनी प्रतिनिष्ठा को प्रमाणित करती है। प्रत्येक पुरुष की इच्छा होती है कि उसकी पत्नी पतिव्रता हो जो कदाचित संस्कृति के अनुरूप ही है। रानी प्रतिनिष्ठा उसकी हार को जीत में परिणत कर देती है। आदर्श नारी का आदर्श रूप मायादेवी के माध्यम से कहानीकार ने चित्रित किया है।

'कान्ह गायब हो गया' कहानी का लता वयस्क होती नवयुवती का चरित्र है। मातृहीन पुत्री को कलाकार पिता आनंद लाड़-प्यार से पालता है वही समाज के पाखंडी पुजारी मंदिर जैसे पवित्र पावन तीर्थ पर उसे छेड़ने का प्रयास करते हैं। बैटी की मनोदशा देख पिता आनंद कुछ-कुछ अनुमान लगा लेता है और धर्म के ठेकदारों के इस अनुचित व्य.वहार पर क्रोध से भर जाता है। धर्म के ठेकेदारों के अनाचार को सभी भक्तों के समक्ष प्रस्तुत कर अपने जीवन में व्याप्त वेदना को हल्का कर धीरे-धीरे अपनी बेटी के सुखमय भविष्य की चिंता में वह कलाकार बाप अपनी कुटिया में लौट आता है। यहाँ धार्मिक भ्रष्टाचार का पर्दापाश करना कहानीकार का उद्देश्य रहा है। डॉ.नायर कहानी के माध्यम से नारी की सुरक्षा पर इसमें विचार किया गया है।

हिन्दी पत्रकारिता की दिशा और दशा..........

अधिक दोषी मानते है। परन्तु वास्तविकता यही है कि बाजारवाद के लाभ से लाभान्वित होने के प्रयास में अन्य के ऊपर दोषारोपण करके स्वयं को मुक्त नहीं किया जा सकता। प्रमाण है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया के काफी विस्तार होने के बाद भी महानगरों से लेकर छोटे शहरों तक लोग रात में सोते समय भी टी.वी. पर समाचार देखने और सुनने के बाद भी सुबह होते ही सबसे पहले अख़बार में समाचार पढ़ने बैठ जाते है। फिर किस आधार पर समाचार पत्र के प्रचार-प्रसार को इलेक्ट्रानिक मीडिया प्रभावित कर रहा है।

समाचार पत्रों को खतरा उसकी गलत दिशा की ओर कदम बढ़ाने से है। पहले उसे बाजारवादी आकर्षण से मुक्त होकर पुनः पुरानी परम्परा का अनुसरण करना ही होगा। तभी पत्रकारिता की विश्वसनीयता बढ़ेगी और उसे तथा पाठकों को सही दिशा प्राप्त हो सकेगी।

पत्रकारों और पत्रों के संचालकों को पीत पत्रकारिता और सत्ताभोगी नेताओं के प्रशस्ति गान के बजाय, जनमानस के दुःख दर्दो का निराकरण, समाज एवं राष्ट्र के उन्नयन के लिए निःस्वार्थ भाव से कर्त्तव्य का पालन करना होगा, तभी वे लोकतंत्र में चौथे स्तंभ का अस्तित्व बनाये रखने में सफल हो सकेंगे।

भारतीय पब्लिक अकादमी, चांदनरोड, फरीदीनगर, नखनऊ-२२७०१५

'चमार की बेटी' कहानी में भारतीय समाज की एक ज्वलंत समस्या अनमेल विवाह का चित्रण है। पंद्रह साल की अल्हड़ किशोरी प्रतिभाशाली कुंती को उसका पिता दहेज न दे सकने के कारण एक बूढ़े से शादी करने की विवशता है। अपने सामने कोई मार्ग न होने पर कुंती अपनी अदम्य इच्छाओं को तजकर गंगा की पवित्रता में लीन हो जाती है। कहानीकार ने घर और समाज में नारी की बुरी हालत को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

'भवोति अम्मा' कहानी का नारी पात्र भवोति अम्मा है। कहानीकार उद्देश्य इस नायिका का रेखाचित्र खींचना नहीं है, पाठकों का उसके बाहरी रुप को भेदकर अंतरंग में स्थित वेदना, ममता आदि के परिचय कराना है। पतिविहीन भवोति अम्मा स्वाभिमानी है जो दूसरे के सम्मुख हाथ पसारने को तैयार नहीं है। अपने बच्चों को गाली देना तथा मारना-पीटना उसके नित्य क्रम में शामिल है। भवोति अम्मा का यह विकृत रुप समाज की ही देन है। समाज ने कभी उसकी विपन्नता पर तरस नहीं खाया और चार पितृहीन बच्चों की माँ निराशा और अभावों में जीवन जीती रही। उसकी बाहरी विकृतियाँ उसके भग्न हृदय से ही अद्‌भूत है। बोट माँगने आये नेताओं से कहती है - "अरे भाई तुम लोग क्यों मारे-मारे फिर रहे हो? तुम्हें वोट चाहिए? किसके लिए? खूब रहा? मेरा वोट पाकर तुम शासन खूब कर चुके हैं। आए हो, शरम नहीं आयी तुम्हें। मेरे दो बच्चे भूख से तड़प-तड़प कर मरे तब किसी कुत्ते को इस ओर झांकते नहीं पाया। मैंने अकेले अपने बच्चों को दफने दिया।।" (भवोति अम्मे,पृ.३१) कहानीकार की दृष्टि में अपराधी वह समाज और शासन है जिसने मानव को भूख और शोभ से मुक्त करने का कोई प्रयास नहीं किया है।

'अजन्ता का कलाकार' कहानी में कुलीन वर्ग की नारी और एक गरीब चित्रकार के बीच में जो वर्ग संघर्ष है, इसका चित्रण हुआ है। सवर्ण जाति में जन्मी राजलक्ष्मी के मन में अजन्ता के चित्रकार के प्रति सम्मान की भावना है, लेकिन उस चित्रकार के चित्रों के प्रति जो प्यार है, उससे ऊपरी दृष्टि से अपवित्रता का संकल्प खत्म हो चुका है। कहानी के अंत में जातीयता अपना भयंकर रुप धारण कर लेता है। राजलक्ष्मी को छूने की चित्रकार की अद्म्य चाह के आगे प्रतिबंध स्वरुप सवर्ण युवती की अहं एवं जातीयता बोध उठ खड़ा होता है। कहानीकार ने यहाँ कलाकार की संवेदना को मुखरित किया है। व्यक्ति जिस बाहरी रुप सौंदर्य पर आकर्षित होता है वह तो क्षणिक है और क्षणभंगुर है, शाश्वत सौंदर्य तो मन का, विचार का, व्यक्तित्व के विविध पहलुओं का और उत्कृष्ट कार्यों में निहित होता है।

'बापू का संकेत' कहानी में पाप को घृणा करो पापी से नहीं का उदार अहिंसावादी सिद्धांत प्रस्तुत कहानी में है। प्रस्तुत कहानी में चोरी करनेवाले को माफी और दो रुपये देते हुए कथानायक ने गाँधीजी के महान आदर्श का पालन किया है। इससे उस आदमी में सुधार लाने में कथानायक सक्षम होता है। रामलाल नामक एक सुनार कथानायक के बरामदें में बैठा, उस की बेटी की टूटी माला को जोड़ रहा है परंतु बड़ी चतुराई से माला के तीन टुकडे करके एक को अपनी झोली में रख लेता है। कथानायक की दृष्टि में बापू के चित्र पर पड़ती है जिससे प्रेरित होकर वह सुनार को उनकी मेहनत के दो रुपये देकर विदा करता है। कथानायक का यह अहिंसात्मक आचरण स्वर्णकार को ग्लानि, प्रायश्चित और अपराध बोध की आग में पाँच साल तक जलाता है। दूसरे लोगों द्वारा सोनार चोर पुकारने से व्यथित होकर उसने अपने कुकृत्य की स्वीकृति द्वारा प्रायश्चित कर लिया। कथानायक के अहिंसक विचार से उसकी पापवृत्ति समाप्त हो गयी। उसके कथन है - मैं आज झूठ नहीं बोलता, अन्याय नहीं सोचता, नहीं करता, स्वार्थ बिलकुल छूट गया है मगर लोग अब भी मुझे सुनार चोर ही छिपे-छिपे पुकारते हैं। सबसे अधिकार चोर हूँ उनकी दृष्टि में जो मेरे जैसे सुनार का काम करते हैं। इस दुःख से बाबुजी! मैं हरदम जला जा रहा हूँ।

'अब कलियुग है' कहानी में मनुष्य के करतूतों से भगवान भी व्याकुल है। चिंताधीन है। भगवान की निंदा करनेवाले को राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार प्राप्त हो जाता है। तभी भगवान पहचान लेता है कि यह कलियुग है। 'अब आप मकान बदलिए' कहानी में कहानीकार को भूत-प्रेतों पर अटूट विश्वास है। जबकि आज के भौतिकवादी युग में ये समस्त बातें सारहीन ही प्रतीत होती है। लेखक ने एक प्रेतात्मा को पात्र के रुप में व्यक्त करके मकान के किरायेदार प्रबोध को आकर्षित होने के वृतांत को मनोरम रुप में व्यक्त किया है। दूकानदार द्वारा इस रहस्य का उद्‌घाटन भी करवा दिया है कि वह रमिणी नारी रुप नहीं अपितु कुछ वर्ष पूर्व मृत लडकी है। मकान इसलिए कोई किराये पर नहीं लेता क्योंकि इसमें प्रेतात्मा का निवास है। इससे स्पष्ट होता है कि कहानीकार का भूत-प्रेत पर विश्वास है।

'बेचारा नक्सल' कहानी में जीवन की विषमता का चित्रण है। जिस आदमी को कथानायक नक्सलवादी मानकर अपने परिवार से दूर रखता है। वह अंत में उसके बच्चे का रक्षक बनता है। तभी यह भी पता चलता है कि असल में नक्सलवादी वह आदमी नहीं, जो स्वयं कथानायक का बेटा है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि डॉ.नायर जी की कहानियों की विशेषता यह है कि कहीं भी भारतीयता ह्वास नहीं हुआ है। उनकी दृष्टि सामाजिक और संस्कृतिक आदर्शों पर केन्द्रित रहती है। डॉ.नायर जी का समस्त जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए सर्मर्पित है। कहानीकार एक ओर अपने चारों ओर व्याप्त कुंठा, भ्रष्टाचार एवं

रामकथा के स्वर्णिम कलशः पं. राजेन्द्र अरुण

बद्री नारायण तिवारी

दिल्ली से देश के सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्य की विविध विद्याओं के प्रकाशक श्री श्याम सुन्दर जी के सुपुत्र श्री. प्रभात जी का फोन आया। प्रभात जी ने इ, वर्ष तुलसी जयन्ती शनिवार २२ अगस्त २०१५ पर रामायण सन्देश की स्थापना अवसर पर मॉरीशस में एक ग्रन्थ के प्रकाशन की चर्चा की। इसमें मेरा आलेख रामायण सेन्टर के संकल्पकर्ता मनीषी श्री.राजेन्द्र अरुण जी पर चर्चा करने पर पुरानी स्मृतियां मुझको याद आने लगी। सर्वप्रथम भारत के सांस्कृतिक दूत कहे जाने वाले मित्रवर श्री लल्लन प्रसाद ब्यास ने मुझसे मॉरीशस में तुलसी रामायण तथा हिन्दी के प्रचार प्रसार में सतत् दो नामों का उल्लेख किया था जो आज भी मुझे याद है वह नाम हैं स्वामी कृष्णचन्द तथा श्री राजेन्द्र अरुण जी। स्वामी कृष्णानन्द ने मानस की एक लाख प्रतियाँ वितरित भी किया था।

देश-विदेश में तुलसी रामकथा विषयक कानपुर में मानस संगम संस्था दो सम्मान प्रतिवर्ष प्रदान करती है। उस समय ब्यास जी ने मॉरीशस में श्री राजेन्द्र अरुण जी द्वारा मानस के पात्रो पर आधारित कई ग्रंन्थों का प्रकाशन प्रभात प्रकाश दिल्ली से हुआ जिसमें रोम-रोग में राम रघुकुल रीति सदा, जग जननि जानकी, हरिकथा आनन्ता, कथ कैकेयी कथा भरतमुन गाथा पर मानस संगम साहित्य सम्मान (ताम्र पत्र) पं.राजेन्द्र अरुण जी को कानपुर के समारोह में प्रदान किया गया। उनके बोलने की भावना प्रधान शैली को हज़ारों श्रोताओं ने प्रशंसा की।

मॉरीशस में प. राजेन्द्र अरुण के बहुआयामी व्यक्तित्व का निकट से देखने का अवसर मिला। सर्वप्रथम अरुण जी ने फोन पर यह शुभ समाचार बताया कि मॉरीशस को संसद ने सर्वसम्मति से एक अधिनियम (एक्ट) पारित करके रामायण सन्टर की स्थापना की है। संसार में यह रामायण सेन्टर सर्वप्रथम संस्था है, जिसे रामायण के आदर्शों के प्रचार-प्रसार के लिये किसी देश की संसद ने शासकीय रूप में स्थापित किया। ज़ातव्य हो कि संसद में सभी धर्मों के प्रतिनिधि हिन्दू, मिस्लिल, इसाई तथा फ्रेंच आदि ने सर्वसम्मति से रामायण सेन्टर एक्ट को पारित करके रामकथा देशो को एक दिशा प्रदान किया। उसी संस्था के अध्यक्ष पं. राजेन्द्र अरुण मॉरीशस में रामायण गुरु के नाम से विख्यात है। उसका भी एक मुख्य कारण है कि वह जिस विदेशी कम्पनी के मुख्य कर्ता धर्मा हैं उससे निवृत्त होने पर नित्य एक घण्टा रामायण पर प्रवचन हेतु सभी स्थानों में निःशुल्क जाते थे। ऐसे दृढ़ निश्चयी संकल्पकर्ता पं. राजेन्द्र अरुण पर आचार्य सेवक वात्सायन की प्रस्तुत पंक्तियां कितना उनके व्यक्तित्व पर सटीक बैठती हैं-

जो होता है, होने दो; यह पौरुषहीन कथन है।
जो हम चाहेंगे, होगा; इन शब्दों में जीवन है।।

अरुण जी की जीवन शैली तथा उनकी विदुषी धर्मपत्नी डॉ.विनोद बाला जी बीनू जी के नाम से प्रसिद्ध है। मैंने उनके साथ आवास में एक सप्ताह मॉरीशस प्रवास में जिस आत्मीयता का अनुभव किया है। वह आज भी याद हैं। मेरे साथ आशु कवि डॉ.दुर्गा चरण मिश्र भी मॉरीशस गये थे। उनकी तत्काल स्वनिर्मित रचनाओं ने वहां धूम मचा दी थी। उन्हें जिस प्यास से माइकल कहकर सम्बोधित करते थे आज भी याद है। डॉ. बीनू जी प्रातः नाश्ते में क्या बनाऊ? वह भी महात्मा गाँधी इंस्टीट्यूट में निदेशक पद पर कार्यरत होने पर भी हम सभी का नाश्ता (नौकरानी थी) किन्तु स्वयं बनाती थीं। इस पारिवारिक व्यवहार से कभी भी विदेश का अनुभव नहीं हुआ।

आगस्त २००३ के इन्दिरा गाँधी स्टेडियम के मुख्य आयोजन में सर्वप्रथम पुरस्कार समारोह में जिस भाँति सम्मान आयोजित था। वह मेरा नहीं भारत का तथा तुलसी के चरण रज का सम्मान अनुभव हो रहा था। विशाल खचाखच भरे सभागार में जिस भावपूर्ण तुलसी जयन्ती का समारोह था उसकी कल्पना स्वदेश में होना सम्भव नहींष वहाँ इस जयन्ती को हिन्दी से सम्बन्धित करने से उसमें एक नयापन अनुभव किया। इसका प्रमाण मॉरीशस यात्रा कवि से अरुण जी, सुरेश राम वरन आदि को पढ़कर आप स्वयं अनुभव करेंगे।

दूसरे दिवस प्रधानमंत्री मॉरीशस माननीय श्री. जगन्नाथ अनिरुद्ध ने भोजन पर आमंत्रित किया। वहाँ प्रोटोकॉल से हटकर नवोदित स्वर के विद्धान सम्पादक डॉ. गिरिजा शंकर त्रिवेदी की साहित्यिक अन्ताक्षरी तथा मानस अन्ताक्षरी कृतियों का लोकर्पण भी किया जो वहाँ के फ्रेंच चंडेली मरसियन अखबार ने प्रमुखता से प्रकाशित किया था।

मॉरीशस के आयोजित कार्यक्रमों में साथ ले जाने के अलावा मॉरीशस के प्रमुख पुलिस अधिकारी श्री रामजीत जी ने अपनी कार में ले जाकर दिखाया। कानपुर के समारोह में सर्वप्रथम भाग लेने वाले श्री. सुरेश राम वरन जो प्रथम प्रधानमंत्री सर शिव सागर राम

मूल्य-विघटन को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाते हैं तो दूसरी ओर सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों पर आस्था व्यक्त करते हुए आज के मनुष्य के विघटित व्यक्तित्व को ऐतिहासिक चेतना की अखंडता से समन्वित भी करते हैं। **अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल) तब-करमाला, जि-सोलापुर (महाराष्ट्र)**

डॉ. तंकमणि अम्मा (महामंत्री, के.हि.सा. अकादमी) केन्द्र सरकार से पुरस्कृत हो गई। अकादमी के सदस्य **डॉ.अजय कुमार** को केन्द्र हिन्दी साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। दोनों का आदर-सम्मान २० दिसंबर को अकादमी हॉल में डॉ.नायर जी के जन्मदिन समारोह के अवसर पर किया जाएगा।

गुलाम के सचिव तथा उनके हिन्दी पत्र जनता के सम्पादक भी थे वह मुझे २४ घण्टे के लिये अपने साथ अपने निवास के अलावा मॉरिशस भी घुमाया। उनका आवास समुद्र तट पर था। वहाँ प्रातः काल से ही आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से संतवाणी, तुलसी मानस की चोपाइयों के अलावा संस्कृत श्लोकों से शुभारम्भ होने से विदेश का आभास ही नहीं हो रहा था। मॉरीशस यात्रा पर एक संस्मरणात्मक विदेश यात्रा पर कृति मानस यात्राः पगडंडी से सागर पर लिखी थी। इसका लोकार्पण भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति श्री विश्वेश्वर नाथ खरे ने किया तथा समर्पित राष्ट्र संत मोरारी बापू को किया।

जहाँ तक मुझे याद है सर्वप्रथम रामचरित मानस का सीधे अन्तर्राष्ट्रीय प्रसारण मॉरीशस में ख्याति प्राप्त राष्ट्रसंत मोरारी बापू का आस्था चैनेल से प्रसारित हुआ था। उस मानस प्रवचन का उद्घाटन तत्कालीन मॉरीशस के मुस्लिम राष्ट्रपति .... ने किया ही नहीं वरन् बैठकर तुलसी रामकथा का श्रवण भी किया था। इसकी सम्पूर्ण विवेचना नित्य प्रवचन के समय उसके तत्कालीन पत्रकार पं. माधव कान्त मिश्र करते थे। इसी आधार पर पं.माधव कान्त मिश्र जो अब पत्रकार से सन्यासी होकर परिवर्तित नाम मार्तण्डपुरी से विख्यात हो चुके हैं। उनको मानस संगम ने अन्तराष्ट्रीय तुलसी रामकथा के प्रसंग हेतु ताम्रपत्र प्रदान किया था। मॉरीशस से सर्वप्रथम प्रख्यात रामकथा व्याख्याता संत मोरारी बापू ने वहाँ पं. राजेन्द्र अरुण जो उस देश में रामायण गुरु को नाम से चर्चित है। सर शिव सागर राम गुलाम के हिन्दी पत्र जनता का सम्पादन भी किया सन् 1983 से अनवरत पं.राजेन्द्र अरुण ने रामचरित मानस के प्रवचन के अतिरिक्त मानस के पात्रों पर नूतन ललित शैली में रामायण के व्यवहारिक आदेशों पर लेखनी चलाई। अभी नई कृति मानस में नारी में सती का संशय, पार्वती की श्रद्धा, कौशल्या और सुमित्रा की पारिवारिक मूल्यों के प्रति पूर्ण समर्पण, सीता का राम के व्याकीर्ण पथ का निःशब्द अनुसरण, कैकेयी की ईर्ष्या, मंथरा की कुटिलता, शूर्पणखा की कामलोलुपता, अनुसूइया की आन्तरिक पति निष्ठा, शबरी की निष्कपट भक्ति, तारा की मन्दोदरी की बुद्धिमता और नीति कुशलता तुलसी कृत रामचरित मानस की अमूल्य निधि है। इनके कारण ही रामकथा को गरिमा और गति प्राप्त होती है।

पं. राजेन्द्र अरुण ने विदेश में रहकर ऐशो अराम मौज मस्ती में समय न गवांकर उसका सदुपयोग सपत्नी श्रीमती डॉ.विनोद वाला अरुण ने भी इस क्षेत्र में मंडन मिश्र की विदुषी धर्मपत्नी भारती की प्रतिरूप बनीं। उन्होंने भी रामकथा के नैतिक मूल्यों का मॉरिशस में प्रभाव विषयक शोध विदृत्प्रवर डॉ.विद्या निवास मिश्र के निर्देशन में किया। उसी शोध पर आधारित डॉ.विनोदवाला अरुण की इसी वर्ष सन् 2015 में रामकथा में नैतिक मूल्य 358 पृष्ठ का ग्रंथ देश का प्रमुख संस्थान, प्रभात प्रकाशन ने नयी दिल्ली से प्रकाशित भी किया है। डॉ. विनोद वाला अरुण भारत और मॉरीशस के संयुक्त सहयोग से स्थापित विश्व हिन्दी सचिवालय को सर्वप्रथम महासचिव रहीं। इस समय भी रामायण सेन्टर में सेवा निवृत्त के पश्चात मानद उपाधि के रूप में उपाध्यक्षा के पद पर कार्यरत है। इस प्रकार रामायण सेन्टर का संसदीय इतिहास में अधिनियम (एक्ट) मॉरीशस में जिस निष्पृह भावना से निर्मित कराकर एक इतिहास का निर्माण किया। पं.राजेन्द्र अरुण के प्रति आचार्य विष्णु कान्त शास्त्री (पूर्व राज्यपाल हिमांचल एवं उत्तर प्रदेश) की रेखांकित पंक्तियां कितना यथार्थ चित्रण कर रही है-

ध्येयनिष्ठ हो अगर समर्पण विनयपूर्ण हो प्रतिपद,
सहज साधनामय जीवन हो, रामकृपा की सम्पदा।
मेवा खाने की न लालसा हो यदि अपने मन में,
सेवा का छोटा सा पौधा, बन सकता है बरगद।

मानस संगम, महाराज प्रयाग नारायण
मन्दिर (शिवाला), कानपुर २०८००१

(पुनरचः पं.राजेन्द्र अरुण के रामकथा साहित्य सृजन पर कानपुर विश्वविद्यालय (भारत) में राय बरेली के सतलाल ने विदुषी डॉ.चंपा की वास्तव (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पीरोजगाँधी डिग्री कॉलेज) के निदेशन में शोध उपाधि पीएच.डी. प्राप्त कर चुके हैं।)

सम्मेलन वेदी

जस्टीस हरिहरन नायर ने डॉ.नायर जी को शौल पहनाते हैं।

पद्मश्री रवीन्द्रकुमार जी डॉ.नायरजी को शौल पहनाते हैं।

पद्मश्री डॉ.रवीन्द्रकुमार डॉ.नायरजी को स्वर्णपदक पहनाते हैं।

पद्मश्री डॉ.रवीन्द्रकुमार की पत्नी कमलेश्वरजी को आदर-सम्मान

डॉ.शमशद बेगम को पुरस्कार डॉ.नायरजी देते हैं।

डॉ.कुलदीप सिंह चौहान (एस.बी.टी., पूजप्पुरा) डॉ.श्रीदेवी एस. को एस.बी.टी. हिन्दी साहित्य पुरस्कार प्रदान करते हैं।

डॉ.प्रमीदा एस.बी.टी. पुरस्कार स्वीकार करती हैं।

3rd Viswa Hindi Sammelan New Delhi - 1983

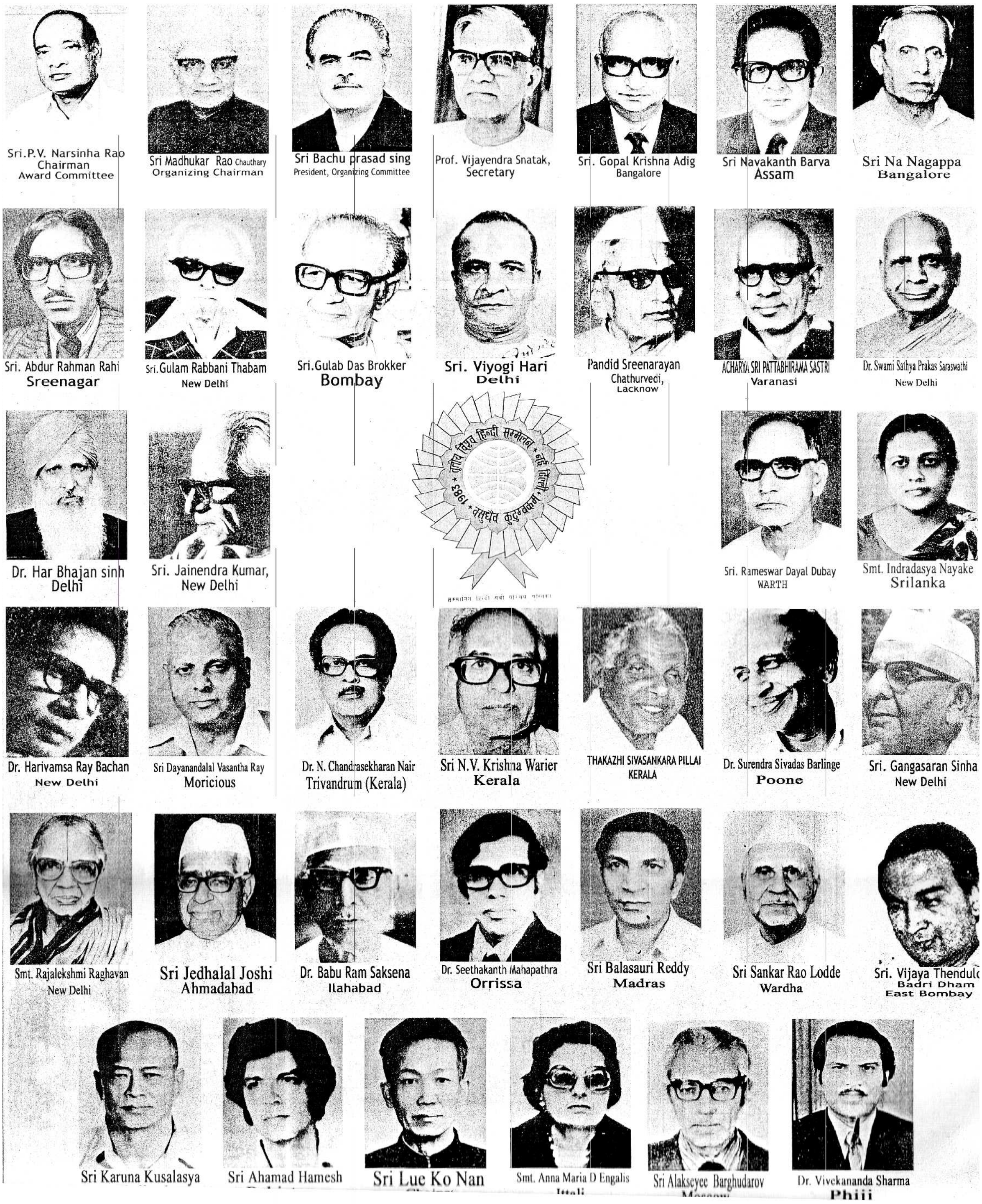

विश्व हिन्दी सम्मान प्राप्त भारतीय विद्वान

डॉ.प्रभाकर श्रेत्रिय

डॉ.प्रभातकुमार भट्टाचार्य (उज्यैन)

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर (त्रिवेन्द्रम, केरल)

डॉ.मधु धवान (तमिलनाडु)

प्रो.माधुरी जगदीश छेड़ा (मुंबई)

प्रो.अनन्तराम त्रिपाठी (मुंबई)

कुमारी अहम कामै (मणिपूर)

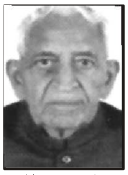

डॉ.परमानंद पांचाल

डॉ.नागेश्वर सुन्दरम

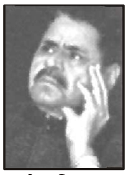

प्रो.हरिराम मीणा

डॉ.व्यास मणि त्रिपाठी

डॉ.सुरेश कुमार गौतम (साहित्यकार)

श्री.आदित्य चौधरी (सलाहकार)

डॉ.के.के.अग्रवास (लेखक, चिकित्सक)

श्री.अन्नूकपूर (अपनी हिंदी शब्दों के जादू से बॉलिवुड में हिन्दी को नई पहचान दिलाई)

श्री.अरविंदकुमार (पत्रकार)

श्री.माताप्रसाद (अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल)

श्री.आनंद मिश्र अभय (शुद्ध एवं प्रांजल हिन्दी के पक्षाधर)

श्री.रामबहादुर राय (पत्रकार, संपादक, संवाददाता)

श्री.रामदरश मिश्र (उपन्यासकार)

विश्व हिन्दी सम्मान प्राप्त भारतेतर विद्वान

श्री.अनूपकुमार भार्गव (अमेरिका)

श्रीमति स्नेह ठाकुर (कनाडा)

प्रो.हाइंस वेर्नल वेसलर (जर्मनी)

डॉ.अकीरा ताकाहाशी (जापान)

प्रो.उषादेवी शुक्ला (दक्षिण अफ्रीका)

सुश्री कमला रामलखन (त्रिनिदाद एवं टाबैगो)

डॉ.दैमन्तास वलनचूनास (लिथुआनिया)

श्रीमति नीलम कुमारी (फिजी)

डॉ.सार्ज वर्बक (बैल्जियम)

श्री.अजामिल माताबदल (मॉरीशस)

श्री.गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल (मॉरीशस)

डॉ.इंदिरा गाज़िएवा (रूस)

सुश्री.दसनायक मुदियंसेलागे इन्द्राकुमारी दसनायक (श्रीलंका)

श्री.मोहम्मद इस्साईल (सउदी अरब)

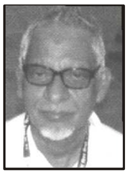

श्री. सुरजन परोही (सूरीनाम)

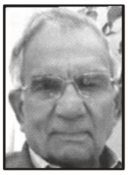

श्री. कैलाशनाथ बुधवार (यू.के)

डॉ.उषाराजे सक्सेना (यू.के)

श्री.हाशिम दुर्रानी (ऑस्ट्रेलिया)

डॉ.इमरे बांगा (हंगरी)

डॉ.पी.जयरामन (अमेरिका)

कविता

जौंक

तेजराम शर्मा, श्रीरामकृष्ण भवन,
अनाडेल, शिला १७१००३

आठवीं कक्षा की बात है
कहीं जंगल मे
पहाडी जल स्रोत से
पानी पीते हुए
राजा राम की नाक में जौक चली गई

अन्दर-ही-अन्दर
मोटी होने लगी तो चिन्ता हुई
नाम-हकीम वाले सारे ग्रामीण उपाय
असफल रहे

क्लास में कभी-कभार
काली जौंक
नाक से थोड़ी सी बाहर लपकती थी
शास्त्री जी श्लोक पढ़ाते रहते
क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतवय्युपपद्यते
पर सब की नज़रें
नाक पर ही लगी रहती

अन्त में यह तह हुआ
कि बिना जल पीए तेज धूप में बैठा जाए
पानी की कटोरी नाक के पास रहे
और कपड़ा हाथ में
जैसे ही पानी की तलाश में
जौंक बाहर लपके
उसे जोर से ख़ींच लिया जाए
एक दो बार जोक पकड़ में आई थी
पर सांप-सी लम्बी पूँछ देख कर
बच्चे डर गए

एक हाथ में पानी की कटोरी
और दूसरे में खुरदरा कपड़ा लिए
मैं इन्तज़ार कर रहा हूँ
कि जौक बाहर लपके
पर जौंक नहीं निकली
इन्तजार कर रहा हूँ आज तक •

वोर्डस्प से

സംഗ്രഹകർത്താ:
ജസ്റ്റിസ് എം. ആർ. ഹരിഹരൻനായർ

കാടില്ലെങ്കിൽ മഴയില്ല
മഴയില്ലെങ്കിൽ കാടില്ല
കാടില്ലാതെ മഴ നിന്നാൽ
ദാഹനിവർത്തിക്കാവില്ല

മഴയില്ലെങ്കിൽ പുഴയില്ല
പുഴയില്ലെങ്കിൽ ജലമില്ല
ജലമില്ലെങ്കിൽ കൃഷിയില്ല
കൃഷിയില്ലെങ്കിൽ ചോറില്ല

കാടുകുറഞ്ഞാലത്യുഷ്ണം
ഉഷ്ണാധിക്യാൽ മഞ്ഞുരുകും
മഞ്ഞുരുകുമ്പോൾ കടൽപൊങ്ങും
കടൽ പൊങ്ങുമ്പോൾ കരമുങ്ങും

കരയില്ലെങ്കിൽ കൃഷിയില്ല
കൃഷിയില്ലെങ്കിൽ ചോറില്ല

കാടില്ലെങ്കിൽ വിഷവായു
ശ്വാസമെടുക്കാൻ കഴിയില്ല
ജീവശ്വാസമെടുക്കാനായ്
കുറ്റി ചുമന്നു നടക്കേണം

ഓസോൺപാളികളില്ലെങ്കിൽ
ദുസ്സഹമാകും ജീവിതവും
ശോണിത രശ്മി ചെറുക്കാനായ്
ചട്ട ധരിച്ചു നടക്കേണം

കാടും പുഴയും ഇല്ലാതെ,
പുല്ലും മേടും ഇല്ലാതെ
ജീവികളൊന്നും ഇല്ലാതെ
മാനവ ജീവന്നെന്തർത്ഥം!

സംരക്ഷിക്കൂ കാടുകളെ
സംരക്ഷിക്കൂ അരുവികളെ,
സംരക്ഷിക്കൂ ജീവികളെ,
ജീവിച്ചോട്ടെ ചെറുമക്കൾ

यदि वन नहीं है तो वर्षा नहीं
जहाँ वर्षा नहीं है तो वहाँ वन भी नहीं
न वर्षा है न वन है
वहाँ प्यास बुझाना संभव नहीं

जहाँ वर्षा नहीं वहाँ नदी नहीं
नदी नहीं है तो पानी कहाँ?
जल नहीं तो कृषि नहीं है
जहाँ खेती नहीं वहाँ चावल कहाँ?

वन जहाँ है कम वहाँ है गर्मी का तेवर
गर्मी बढ़ती है बर्फ पिघलता है
पिघले बर्फ थल-जल पानी
थल जल पानी डुबो किनारा

थल जहाँ नहीं खेती नहीं
जहाँ खेती नहीं वहाँ चावल कहाँ?

जहाँ वन नहीं है वहाँ हवा विषमय
श्वास लेना संभव नहीं
प्राणवायू के लिए
बोट्टिल लेकर चलना है

बिना ओसण लेयरों के
दूभर है मानव जीवन
शोणित रश्मि को रोके
मोटे कुरते पहने

बिना वन-नदी के
बिना तृण-टीले के
बिना प्राणि-जनों के
मानव जीवन का क्या भाव?

बचा दो वनों को
बचा दो झरनों को
बचा दो जीवों को
जीने रहने दो बच्चों को

अनुवादक: आर.राजपुष्पम पीटर

जनसंख्या-वृद्धि नहीं, ज़रूरी है अपने मानसिक स्तर को उन्नत करना

सीताराम गुप्ता

देश में ऐसे अनेक हिन्दू और मुसलमान हैं जो हिन्दुओं और मुसलमानों का धर्म बचाने के लिए बेचैन रहते हैं। अनेक ऐसे व्यक्ति और संस्थाऐं उत्पन्न हो गई हैं जो हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए मरी जा रही हैं और ऊल-जलूल अपीलनुमा फर्मान व फतवे ज़ारी करने में अपने प्रतिद्वंद्वी मुस्लिम भाइयों से किसी भी तरह पीछे नहीं हैं। उन्हें ये अधिकार किसने दिया इसका तो पता नहीं चलता लेकिन इनकी प्रासंगिकता पर चर्चा करना और गलत होने पर इन्हें रोकना व गैरकानूनी होने पर इन्हें दंडित करना अनिवार्य प्रतीत होता है। मेरे सामने डाक से आया एक पर्चा पड़ा है जिस पर हिन्दू समाज के नाम एक अपील छपी है जो इस प्रकार है:

हिन्दू धर्म की यही पुकार
हम दो हमारे चार

महर्षि मनु व महर्षि दयानंद सरस्वती का सपना करना है साकार मनु स्मृति के उल्लेख को महर्षि दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि एक पुत्र न होने के बराबर है अतः एक से अधिक ही होने चाहिए

हिन्दू समाज से अपील

यदि आप भारत को इस्लामिक देश बनने से बचाना चाहते हैं और भारत को हिन्दुस्तान बनाए रखना चाहते हैं तो हम दो हमारे चार क मंत्र अपनाना होगा। बच्चों को अल्लाह की देन बताकर अपनी जनसंख्या बढ़ाकर मुसलमानों ने संसार के अनेक देशों को इस्लामिक बना दिया। इसी प्रकार हमें भी बच्चों को भगवान की देन मानकर अपनी जनसंख्या बढ़ाकर धर्म व राष्ट्र की रक्षा करनी होगी।

निवेदक-यति नरसिंहानन्द सरस्वती, महन्त प्राचीन देवी मंदिर, डासना (गाजियाबाद) मो.९१-८५९५२५४५१३

इस पर्चे को पढ़ने के बाद मुझे एक प्रसंग का स्मरण हो आया। एक व्यक्ति के यहाँ कुछ मेहमान आए तो वह अपने पडौसी के यहाँ से कुछ थालियाँ व दूसरे बर्तन माँग कर ले गया। पड़ौसी पूर्ण शाकाहारी था जबकि बर्तन माँग कर ले जानेवाला परिवार मांसाहारी था। शाकाहारी व्यक्ति को जब ये पता चला कि उसके बर्तन माँग कर ले जानेवाले उसके पड़ौसी ने उससे मांगकर ले जाए गए बर्तनों में अपने मेहमानों को मांस परोसा है तो उसे बहुत क्रोध आया। उसने कहा, "जब हमारे यहाँ मेहमान आएँगे तो मैं भी उनके घर से बर्तन माँगकर लाऊँगा और उनमें गोबर डालकर खाऊँगा।" ये कैसा प्रतिशोध है?

कैसी प्रतियोगिता है ये? दूसरों से बदला लेकर स्वयं को संतुष्ट करने या आगे ले जाने का कैसा है ये सिद्धांत? दूसरों की गंदगी को अपनाकर या उससे भी ख़राब स्थिति में अपने को डालकर स्वयं को उच्चतर स्थिति में देखने की कल्पना की यह कैसी शैली है? धर्म, जाति, देश-प्रदेश अथवा खानापान के आधार पर इतना अलगाव, इतनी नफ़रत, इतनी संकीर्णता, इतनी असहिष्णुता क्यों हम में दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है? क्या ऐसे उपायों से सचमुच जाति, धर्म व राष्ट्र की रक्षा संभव है? क्या धर्म, कौम, जाति, देश-प्रदेश, खानपान अथवा भाषा-बोली के आधार पर पहले से ही समस्याग्रस्त राष्ट्र को और अधिक समस्याग्रस्त या विखंडित करना सचमुच प्रासंगिक हो सकता है?

आप जिस समाज (मुस्लिम) से भयभीत हैं, जिससे अपनी (हिन्दुओं की) तुलना या मुकाबला कर रहे हैं और अपने धर्म व राष्ट्र की रक्षा करने के लिए उपाय सुझा रहे हैं उस समाज (मुस्लिम) का सत्य देखने का प्रयास कीजिए। उस समाज में भी एक ऐसा वर्ग है जो शिक्षित और अपेक्षाकृत समृद्ध है। देश की उन्नति में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका और योगदान है। मैं व्यक्तिगत रूप से जिन शिक्षित मुस्लिम मित्रों या परिवारों को जानता हूँ उनमें किसी भी प्रकार की संकीर्णता, असहिष्णुता अथवा कट्टरता नहीं है और साथ ही उनके यहाँ भी अन्य धर्म, जाति या कौमों के शिक्षित परिवारों की तरह ही बच्चों की संख्या सीमित या नियंत्रित है।

वास्तव में जिन परिवारों में बच्चों की संख्या कम है वही परिवार शिक्षित व समृद्ध हैं। जिन परिवारों में शिक्षा का उतना प्रचार-प्रसार नहीं है वहाँ न केवल बच्चों की संख्या बहुत अधिक है अपितु समृद्धि का स्तर भी न्यून है। आर्थिक विपन्नता के कारण न तो सही शिक्षा ही संभव है और न अच्छे गुणों का विकास ही। यहाँ स्पष्ट है कि शिक्षा, संस्कार व समृद्धि का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व जनसंख्या है। कम या सीमित जनसंख्या से अधिक शिक्षा, अच्छी शिक्षा व

गीत

मुक्तक

डॉ.सुरेश उजाला, १०८-तकरोही,
पं.दीनदलाय परम मार्ग, इन्दिरा नगर,
लखनऊ-२२६०१६

ऊँची आवाज नगाते रहिए
सोती पीढ़ी को जगाते रहिए
शत्रु यदि आपके मुकाबिल हो
अपनी सीमा से भगाते रहिए

परमार्थ में हम आगे हैं
सुल झाते उलझे धागे हैं
अपनाते अस्तेयू अपरिग्रह
व्यसन दूर हमसे भावो है

हमने जब-जब कदम उठाया
सुखे अधरों को महकाया
सिंध मथा पर्वत को लांघा
तूफानों में दीप जलाया

समता भाव जगाया हमने
सुख का गाँव बसाया हमने
मानवता के लिए साथियों
घर-घर दीप जलाया हमनें

जिन्दगी की रुक सुनी फरियाद हो
तुम हमारे दर्द का अनुवाद हो
मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर नहीं
तुम हमारे मौन का संवाद हो

घर में केवल रुक कमैया
नोंच रही तन-मन महँगईया
विस्फोटों से घिरे हुए है
आज व विश्व के ताल-तलैया

भाव का आवास मन है
आस का आभास मन हैं
जन्म से लेकर मरण तक
व्यक्ति का इतिहास मन है

मैं धड्कन के गीत लिखूँगा
नई नवेली रीत लिखूंगा
तुम नफ़रत के बीज बो रहे
मैं जीवन संगीत लिखूंगा •

समृद्धि। अनियंत्रित या असीमित जनसंख्या से अशिक्षा अथवा अल्प शिक्षा व न्यून समृद्धि तथा रहन-सहन का स्तर।

अब जिस समाज (हिन्दुओं), धर्म व राष्ट्र की रक्षा की चिंता में आप दुबले हुए जा रहे हैं और उसे बचाने के लिए ऊल-जलूस उपाय सुझा रहे हैं उस समाज (हिन्दुओं) की वास्तविकता भी देख लीजिए। यहाँ भी कमोबेश यही स्थिति है। यहाँ भी जो शिक्षित वर्ग है उनके परिवार सीमित हैं। वास्तव में सीमित परिवारों के कारण ही उनमें शिक्षा और समृद्धि का उच्च्य स्तर है। दूसरी ओर मुसलमानों में ही नहीं हिन्दुओं में भी अशिक्षित या अल्प शिक्षित परिवारों में जनसंख्या अधिक है और इसी जनसंख्याधिक्य के कारण ही वे भी सही शिक्षा व समृद्धि से ही नहीं अच्छे स्वास्थ्य तथा सद्‌गुणों के विकास तक से वंचित रह जाने को विवश हैं।

प्रश्न उठता है कि यदि मान भी लें कि उपरोक्त स्थिति वास्तविक और गंभीर है तो क्या इसका अन्य कोई उचित उपाय या समाधान नहीं? बुध्द कहते हैं कि वैर से वैर और घृणा से घृणा को समाप्त नहीं किया जा सकता। बढ़ती जनसंख्या एक बहुत बड़ी समस्या है और किसी एक समस्या से दूसरी समस्या का हल नहीं निकाला जा सकता। वास्तव में किसी भी नकारात्मक तरीके से नकारात्मकता अथवा दुर्गुणों को नहीं मिटाया जा सकता। जनसंख्या वृद्धि को ही लीजिए। जनसंख्या वृद्धि एक विकट समस्या है। किसी भी जाति या कौम में जनसंख्या वृद्धि का अर्थ है उस जाति या कौम में अशिक्षा, अंधविश्वास, बेरोजगारी और इनसे उत्पन्न अनेकानेक सामाजिक बुराइयों में वृद्धि।

बुराइयों से ग्रस्त समाज बहुमत में होकर भी क्या तीर मारेगा? ऐसे समाज में नैतिकता के स्तर का ह्वास ही होता है जिससे उस समाज के अंदर भी और दूसरे समाजों के मध्य भी हर तरह का वर्ग संघर्ष बढ़ता जाता है। फिर आज आप हिन्दुओं की जनसंख्या वृद्धि की बात कर रहे हैं और कल सिर्फ पुरुषों की जनसंख्या वृद्धि की बात करेंगे। ये हमारा हिन्दू धर्म ही है जिसमें सबसे अधिक मादा भ्रूण हत्या की जा रही हैं। जनसंख्या वृद्धि आज वैश्विक समस्या व चुनौती बन गई है। जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाए बिना भारत ही नहीं विश्व के अन्य अनेक देशों के लोगों की उन्नति भी संभव नहीं।

हिन्दू या मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाने के लिए शिक्षा एक अत्यंत कारगर हथियार है। शिक्षा के स्वरूप को बदलने की भी ज़रुरत है। तथाकथित धार्मिक शिक्षा के स्थान पर ऐसी शिक्षा दी जाए जो लोगों में सही समझ और सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण के विकास में सहायक हो। ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे अंधविश्वास, संकीर्णता और वैमनस्य की बजाय वैज्ञानिक दृष्टिकोण, उन्मुक्तता व सौमनस्य उत्पन्न हो। लोग मिल-जुलकर रहें और एक दूसरे के उत्थान के लिए प्रयत्नशील हों। हर समस्या को कोई न कोई हल अवश्य होता है। हमें जनसंख्या वृद्धि करने की नहीं अपितु अपने मानसिक स्तर को उन्नत करने की ज़रुरत है जिससे समस्या का सही हल निकल सके।

ए.डी.१०६-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-११००३४

चित्रकला सम्राट राजा रविवर्मा और समकालीन भारतीय चित्रकार

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

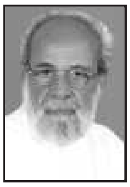

सन् अठारह सौ साठ के समय भारत में तीन महान पुरुषों का आविर्भाव हुआ। सन् १८६१ में रवीन्द्रनाथ टैगोर, १८६३ में स्वामी विवेकानन्द, १८६९ में महात्मा गाँधी। इन महात्माओं ने अलग अलग मार्ग में जन्मदेश भारत की कीर्ति संसार में फैला दी। संसार में साहित्य, अध्यात्म, राजनीति इन मण्डलों में भारत के शीर्षस्थ औन्नत्य को स्वीकार किया गया। लेकिन १८६० के निकट पूर्व यानी १८४८ में केरल में जन्मे राजा रविवर्मा की कीर्ति जो सारे जगत में फैल गयी थी वह हमारे देश की गरिमा को बहुत आगे कर सकी है। मानव जीवन की उन्नति में इन चारों महान पुरुषों ने जो महत्त्वपूर्ण प्रयास अर्पित किया था वह अवश्य क्रान्तिकारी रहा था।

कवीन्द्र रवीन्द्र, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी ये त्रिमूर्ति भारत के बाहर विदेशों में रहते हुए वहाँ के नेताओं के संपर्क में कार्यशील रहे थे। लेकिन राजा रविवर्मा ने अपने चित्रों के माध्यम से ही संसार का आदर प्राप्त किया था। बड़े-बड़े सम्पन्न वर्ग के प्रभूओं एवं कलाकारों ने ही नहीं विदेशों के शासकों एवं बादशाहों ने भी रविवर्मा का समादर किया था और उन्हें प्रकीर्तित किया था। इस प्रकार उपर्युक्त महापुरुषों के पहले ही चित्रकार रविवर्मा संसार में विख्यात हो गए थे। उन्हें जगत के कोने-कोने से जितना आदर प्राप्त हुआ था, जितने पुरस्कार प्राप्त हुए थे, वे सब भारत को प्राप्त आदर और पुरस्कार थे।

उन्नीसवीं सदी में भारतीय हिन्दी कला में जो नवोत्थान हुआ था उसको भी रविवर्मा ने प्रशंसनीय उपलब्धि अर्पित की थी। स्वतः वे आस्तिक एवं भारतीय संस्कृति के समर्थक रहे थे। वे परासक्ति थी मुकाम्बिका दैवी जिनके आशीर्वाद से विश्व में ख्याति-प्राप्त हो गए। श्री रविवर्मा की तस्वीरों में नायिकाओं को जो एकरूपता अथवा रूपसामधर्म्य दिखाई देता है, कहा जाता है वह देवी-दर्शन के प्रभाव से है। वे नियमित रूप से ललिता सहस्रनाम का पाठ करते थे और श्री मूकाम्बिका देवी की पूजा-अर्चना में निष्ठावान रहे थे।

इस प्रकार श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर की कविताओं में स्पन्दित औपनिषदीय संस्कृति, श्री विवेकानन्द के प्रभाषणों में उभरी हुई आध्यात्मिक संस्कृति और गांधीजी के अहिंसत्मक एवं सत्याधिष्ठित सिद्धान्तों के आदर्श का समन्वित स्वरूप ही श्री रविवर्मा की तस्वीरों में प्रत्यक्ष हो गया है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति की जयध्वनि ही यह प्रख्यापित कर देता है। इसी कारण से ही महाकवि ठाकुर, स्वामी विवेकानन्द और राष्ट्रपिता गांधीजी तीनों ने अनेक सन्दर्भों में कलाकार रविवर्मा की प्रशंसा की है।

राजा रविवर्मा ने महाकवि कालिदास की काव्य नायिकाओं एवं काव्य सन्दर्भों का समुचित वर्णन अपने चित्रों के द्वारा प्रतिबिम्बित कर दिया। पुराणकथाओं ने और रामायण-भागवत-महाभारत ने कलाकार रविवर्मा की कल्पनाओं को मूर्त रूप दे दिया है। रविवर्मा के चित्रों के द्वारा भारत में ही नहीं संसार में भी एक क्लासिक संस्कृति फैल गई। रविवर्मा के चित्रों के द्वी-देवता स्वरूप सारे भारत के जन मानस के देव रूप बन गए। आज भारत में जितने भी आराधना-मूर्तियों के रूप दिखाई दे रहे हैं वे सब रविवर्मा के चित्रों के माध्यम से अवतीर्ण हैं। आज भी रविवर्मा भारतीय संस्कृति के आकाश में शक्तिशाली आलोक फैला रहे हैं।

बम्बई की अपनी चित्रशाला से सन् १८९४ से छः वर्ष तक सौ-सौ चित्र उन्होंने बाहर निकाले थे। आखिर १९०१ में उन्होंने एक जर्मन निवासी श्लैषर से केवल २५००० रुपये लेकर मुद्रणालय उसको सौंप दिया। और उस संस्था से रविवर्मा का सम्बन्ध टूट गया। जो पैसे उन्हें प्राप्त हुआ वह ऋण चुकाने में भी पर्याप्त नहीं था। जब श्लैषर को मुद्रणालय बेंच दिया तब उस समय तक मुद्रित ८९ चित्रों का प्रकाशन-अधिकार भी उसे बेच दिया था। ये चित्र भारत की अपनी संपदा हैं। वे सब चित्र भारतीय पुराण कथाओं एवं इतिहासों के उपज थे। वस्तुतः एक अद्भुत घटना थी वह। वे चित्र व्यास, बाल्मीकि, कालिदास की रचनाओं के पुनराविष्करण रहे हैं। जो चित्र श्लैषर को बेच दिए थे उनमें कतिपय चित्रों के नाम यहाँ दिए जाते हैं। चित्रों के ये शीर्षक स्वयं अपनी संस्कृति का उद्घोषण करते होंगे। चित्रों के नाम इस प्रकार हैं:

शकुन्तला का जन्म, लक्ष्मी, सरस्वती, राधा, दमयन्ती, शुक और रम्भा, किरात वेषधारी पार्वती और परमेश्वर, यशोदा और श्रीकृष्ण, मेनका और शकुन्तला, तिलोत्तमा, उर्वशी, अहल्या, द्रौपदी, सुदेषणा, सावित्री और सत्यवान, राम वनवास, शकुन्तला का पत्रलेखन, सीता औप स्वर्णमृग, सीता और रावण, गणपति, राम सीता लक्ष्मण, गंगा का अवतार, कालियमर्दन, रामपटाभिषेक, गोपिकाएँ और श्रीकृष्ण, कृष्णलीला, कंसवध, मलबार सुन्दरी, हंस और दमयन्ती।

इस प्रकार वह सूची बढ़ती जाती है। ८९ चित्रों में ये भी आते हैं। प्रत्येक चित्र एक महाकाव्य जैसा है, अथवा क्लासिक घटनाओं का एक जुलूस।

राजा रविवर्मा द्वारा प्रणीत चित्रों से भारत के असंख्य राजाओं के महल अलंकृत हैं। आज भी असंख्य राजमन्दिर रविवर्मा के चित्रों

से अलंकृत हैं सर टी.माधवराज जब बड़ौदा के रीजेन्ट थे उस समय राजा रविवर्मा वहाँ आमन्त्रित हुए। सीता प्रवेश नामक रविवर्मा-चित्र को प्राप्त ख्याति असंख्य राजाओं और गवर्नरों को आकर्षित कर सकीं। इसके फलस्वरूप एक दर्जन राजाओं के महलों में राजा रविवर्मा को रहना पड़ा था। प्रत्येक महल में अपने अनुज के साथ रहते हुए असंख्य पूर्णकाय चित्रों का निर्माण कर दिया। उनमें कतिपय रियासत ये हैं : मैसूर, भावनगर, पालियत्ताना, आलवार, इन्दौर, उदयपुर, जयपुर, ग्वालियर, रतन आदि।

उस समय ख्याति प्राप्त उत्तर भारतीय चित्रकला शैलियों का विशेषकर मुगल, राजपूत आदि शैलियों का परिचय रविवर्मा को प्राप्त था। लेकिन उन्हें यह विश्वास नहीं था कि उन शैलियों से मुझे कुछ प्राप्त करना है। रविवर्मा के जीवन काल में ही ऊपर यह आरोप किया जाता था कि उनकी रचना शैली पश्चिमी शैली की अनकृति मात्र है और उसमें ऐसा कोई पड़प्पन नहीं है जो भारतीय कला को संपोषित कर सके।

मुगल बादशाह औरंगजेब के दक्षिण के आक्रमण के साथ भारतीय चित्रकला में एक संकर शैली संजात हो गई। फिर भी १७-१८ दशकों में दक्षिण में प्रकीर्तित तंजाउर शैली और मैसूर शैली दोनों ने चित्रकला क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। लगभग इसी समय के साथ भारतीय चित्रकला में एक प्रकार की शिथिलता आ लगी। इसके फलस्वरूप भारतीय चित्रकारों का जीवन भी शोचनीय होने लगा था। इसी माहौल में कलाकार पश्चिमी शैली की ओर आकृष्ट हो गए।

राजा रविवर्मा के विमर्शक भी यह अभिमत प्रकट करते थे कि वे पश्चिमी रचना शैली के सर्वश्रेष्ठ चित्रकार हैं। भारतीय शैली छोड़कर पश्चिमी शैली के चित्रकार के रूप में राजा रविवर्मा विमर्शन के पात्र बने हुए थे। इन विमर्शकों में ई-वी-हेवेल नामक अंग्रेज कला विमर्शक आगे थे। वे १८८७ में मद्रास कला स्कूल के प्राचार्य रह थे। बाद में हेवेल मद्रास से कलकत्ता कला-स्कूल के प्राचार्य होकर गए। हेवेल एक ऐसे कला विमर्शक रहे थे जो भारतीय चित्रों की विविधताओं और अद्भुत उपलब्धियों का आस्वादन करते थे।

राजा रविवर्मा के समय में कलाक्षेत्र में अनेक प्रशस्त कलाकार भारतीय कला के पुनरुद्धार के लिए कार्यशील रहे थे। उनमें सर्वाधिक ख्याति प्राप्त कलाकार रहे थे अवनीन्द्रनाथ ठाकुर। अनेक सहायकों के साथ उन्होंने कलकत्ता स्कूल में एड्वान्स डिजाइन क्लास प्रारंभ किया ई.वी.हेवेल ने भी उन्हें जरूरी प्रोत्साहन दिया था। अवनीन्द्र बाबू के भाई गगनेन्द्रनाथ ठाकुर ने भी इस क्षेत्र में सक्रिय सहयोग दिया। सन् १९०७ में इंडिया सोसायटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट नामक एक संस्था की नींव डाली गयी। प्रारम्भ में तीस अंग्रेजों और पाँच भारतीयों ने मिलकर उस संस्था की स्थापना की और बाद में १९०८ में उस संस्था की ओर से एक चित्र प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी। उस प्रदर्शनी में अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, गगनेन्द्रनाथ ठाकुर, नन्दलाल बोस, शैलेन्द्रनाथ गांगुली, बेंकिट्प्पा, असित कुमार हलदार के चित्र प्रदर्शित हुए थे।

जगन्नाथ विश्वकी तीन बरखा कविताएँ

चौतरफा बात

चली है चौतरफा ये बात
सुहानी आ गई रे बरसात,

प्रेम-पत्र से बादल आए
मनुवा सागर सा लहराए
होगी मन से मन की बात
चली है चौतरफा ये बात

नाचे मोर पपीहा गाए
झरनों का संगीत सुहाए
महकी लता अंक हर पात
चली है चौतरफा ये बात

सागर सरिता की धाराएँ
मस्त हुई प्यासी आशाएँ
जो थी कल तलक अज़ात
चली है चौतरफा ये बात •

प्रीत-पले

झिर-मिर, झरे बरसात
पनघट पे पाँव फिसले
करे धरती से अंबर बात
घूँघट से लाज फिसले

कारी घटा गरज रही
नव-उपमा परस रही
ले आए मेघा बरात
बिरहन मन गीत ढले

क्वाँरी कली चटक रही
फु लवारी महक रही
भंवरों की उतरी जमात
छलिया रूप छले

बाँसुरिया गूँज रही
पैंजनियाँ थिरक रही
अनब्याही संगम की रात
हृदय में प्रीत पले •

ओ.सी.गांगुली, जे.पी.मुल्लर आदि अंग्रेजों की मदद से प्रस्तुत संस्था काफी अभिवृद्ध हो गयी। अनेक स्थानीय कलाकारों ने इसमें सहयोग अर्पित किया। उनमें मैसूर के वेंकिटिप्पा, इलाहाबाद के शैलन्द्रनाथ टे, लाहौर के समरेन्द्रनाथ गुप्त, श्रीलंका के नागाह बाबा, लघनऊ के हकीम मुहम्मद ख़ाँ आदि रहे थे। इनका लक्ष्य प्राचीन परम्परागत कलाओं का पुनरुज्जीवन करना था। नन्दलाल बोस, असित कुमार हलदार आदि का एक कलाकार संघ बना और उसने अजन्ता के भित्ति-चित्रों की नकल करके इंडिया सोसाइटी के द्वारा प्रकाशित किया। जलपुर चित्रकला का अभ्यास करने और उसका प्रचार करने के लिए कुछ कलाकार नियुक्त हुए। एक्सपेरिमेन्टिज्म को काफी प्रचार दिया गया। डॉ.अवनीन्द्र कुमार ठाकुर के निवास में आयोजित होने वाली चर्चाओं में नन्दलाल बोस, ओ.सी.गांगुली, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार आदि चित्रकारों ने नेतृत्व प्रदान किया।

इस प्रकार स्थानीय चित्रकलाओं के नवीकरण एवं उत्थान में सब कहीं प्रयास होने लगा। इसके फलस्वरूप गुजरात में रविशंकर रावल, कनुदेसाई, रविशंकर पंडित, सोमनाथ शा आदि कलाकार

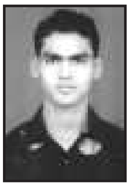

डॉ.रामप्रवेश रजक, सहायक, प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग, पाण्डेश्वर कॉलेज,
पाण्डेश्वर-७१३३४६, जिला-वर्धमान (पं.बं)

किसान

जमीन उसकी
मेहनत उसकी
फसल उसकी
पूँजी उसकी
पर उसपर
अधिकारी जमीन्दारों का
फिर मूख्र उसकी
गरीबी उसकी
मूखमरी उसकी
बदहाली उसकी चिंता उसकी
फिर से फसल उगाने का •

लड़की

लड़की खेलती है जिन्दगी का जूआ
जीती है इस हर से
कि क्या होगा भविष्य मेरा
कैसा होगा सैहर, घर ससुराल
वे रखेंगे जतन से या
ला देंगे भूचाल मेरी जिन्दगी में
फिर भी सजती है सँवरती है
निडर
कुछ हो ना हो
जानती है एक बात जरूर
खायेगा मेरा पति मेरा शरीर
वेशक चाबुक बरसाकर! •

प्रत्यक्ष हुए। नन्दलाल बोस ने प्राचीन मध्यकाल शैलियों को अवलंब बनाकर भारतीय विषयों में नया प्रयोग किया। कुछ कलाकारों ने राजपूत शैली और मुगल शैली पर ध्यान दिया। मनीन्द्र गुप्ता और जलालुद्दीन ने यथाक्रम इन दोनों शैलियों को अपनाया था। बंगाल की लोककलाओं में अभिरुचि प्रकट की थी प्रसिद्ध चित्रकार यामिनी राय ने। देवीप्रसाद राय चोधरी ने प्राकृतिक दृश्यों को अपनाया। छायाचित्र नाम से एक नवीन शैली को जन्म दिया कनुर्देसाई ने। डॉ.आनन्दकुमार स्वामी ने भारतीय कला के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं का चित्रीकरण करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय मण्डलों में भारतीय चित्रकला के परंपरागत एवं यथार्थ दर्शनों की परिभाषाएँ प्रस्तुत कीं। इस प्रकार भारतीय चित्रकला को अपने निजत्व में व्याख्यायित करने का एक प्रशंसनीय यत्न चलता रहा था।

केरल की अपनी एक चित्र रचना शैली कायम रही थी। हमारे कळमेषुतु, तथा भित्तिचित्र-ये दोनों केरलीय चित्रकला के दो मुख्र विधा हैं। पश्चिमी चित्र शैली के आविर्भाव के साथ ये दोनों गौण को गए। प्रचार लुप्त होने पर वस्तुतः इन कलाओं की अवहेलना ही हो गयी। असाधारण प्रतिभा के धनी राजा रविवर्मा बंगाल के यामिनी राय एवं नन्दलाल बोस की तरह केरलीय चित्रकलाओं के समुदधारक रहे होते तो आज वे इस क्षेत्र के अतिमानव चित्रकार बन जाते। लेकिन वे अपने देश में रहकर अपनी प्रतिभा का परिचय देने में असमर्थ रहे थे। इसका एक कारण यही बताया जाता है कि उस समय के महाराजा श्री विशाखम तिरुनाल राजा रविवर्मा के विरुद्ध रहे थें एक महाराजा से बढ़कर ख्याति एवं आदर एक चित्रकार को प्राप्त हो, यह वे सह नहीं सकते थे। उस समय की राजनीति ऐसी रही थी। राजा रविवर्मा ने यामिनी राय और नन्दलाल बोस दोनों का मन ही मन आदर किया होगा। उनके समान एक शैली को जन्म न दे पाने के कारण उनका मन कुण्ठित होता गया होगा। स्वतः सौम्यशील एवं ईश्वरभक्त रहे थे राजा रविवर्मा।

भारतीय चित्रकला को पुनर्जीवत करने के परिश्रम में जब सारे देश में इतने अधिक कलाकार काम कर रहे थे उस समय भी राजा रविवर्मा देश देशान्तरों में चित्रकला के सम्राट के रूप में प्रख्यात होते गये थे। पहले ही कहा जा चुका है कि उनकी चित्र शैली पश्चिमी होने पर भी उनका प्रतिपाद्य भारतीय संस्कृति का संपोषक रहा था। नवीन शैली में भारत की आत्मा को प्रकाशित करने में इतनी सफलता और किसी को प्राप्त नहीं हुई थी। इस दृष्टि से उनके सम्बन्ध में यह आरोप निरर्थक है कि उन्होंने भारतीय शैली की अवहेलना की है। राजा रविवर्मा अपने चित्र सौन्दर्य और उन्मेष की अनुभूति प्रस्तुत करते हैं। उनकी आत्मा केवल फोटोग्राफिक शैली की सीमा में सीमित नहीं होती। भारतीय वाङ्मय के उदात्त एवं उत्तेजक नाटकीय मुहूर्तों की, चित्रपटों में जो अभिव्यक्ति हुई है, वह रंगों के ताल-लय के साथ मानवीय चेतना को एक अभौम दिशा की ओर ले जाती है और वहाँ सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की अनुभूति प्रदान करती है।

लेकिन राजा रविवर्मा नामक चित्रकार को अपने देश में शासनाधिकारियों की ओर से कोई प्रोत्साहन प्राप्त नहीं हुआ था। उन प्रतिबन्धों की उपेक्षा करके भी एक केरलीय चित्रकार एक सच्चे भारतीय होकर जीवित रहे। भारतीय होते हुए विश्व नागरिक की ख्याति अर्जित की। बड़ी विचित्र बात है कि चित्रकला में डाक्टर की उपाधि प्राप्त एक कलाविमर्शक ने राजा रविवर्मा को महाराष्ट्रीय चित्रित किया है। हमारा गौरव हमसे छीन लेने का प्रयास ही उन्होंने किया है। शायद डॉ.चिरंजीलाल झा भी केरलीय राजनीतिक झमेले से अवगत थे। शंकराचार्य को भी केरलीय मानने में कोई न कोई हिचकता होगा। जो भी हो, स्वामी शंकराचार्य के पश्चात देशीय एकता को अगर किसी ने स्थायित्व प्रदान किया है तो वह कला के माध्यम से राजा रविवर्मा ने ही प्रदान किया है।

(सन् १९८१ अक्टूबर में तिरुवनन्तपुरम में संपन्न एक विराट सभा में राजा रविवर्मा का अनुस्मरण करते हुए प्रस्तुत निबंध। फिर कुछेक पत्रिकाओं में और ग्रंथों में संकलिता।)

कर्नाटक में हिन्दी की स्थितिगति

डॉ.सुनीलकुमार परीट

कर्नाटक राज्य दक्षिण भारत का एक बडा राज्य है। इसका भू विस्तार १,९१,७५६ च.कि.मी. है। यहाँ की आबादी लगभग ६ करोड से भी ज्यादा है, और साक्षरता का प्रमाण ७५ प्रतिशत से भी ज्यादा है। जनसंख्या की दृश्टि से भारत में नौवा स्थान और भौगोलिक दृष्टि से सातवाँ स्थान प्राप्त है। औअर कर्नाटक चंदन एवं सोने की खान है। इतना सबकुछ होते हुए भी यहां की शिक्षा पद्धति मात्र निराली है।

भारत स्वतंत्रता के बाद शिक्षा पद्धति किस माध्यम में हो यही एक बडी समस्या थी और उसी समस्या से कर्नाटक भी जूझ रहा था। भारत में एक सूत्र शिक्षा पद्धति के बारे में अनेक समस्याएँ थी, तो तब कोठारी और मेहता आयोग ने सन १९६४ में त्रिभाषा सूत्र का हल बनाया। इस त्रिभाषा सूत्र के अनुसार प्रादेशिक बाषा कन्नड, राष्ट्रभाषा हिन्दी और अंग्रेजी को द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में पढाया जाये। मगर कर्नाटक में तो अंग्रेजी भाषा को ही द्वितीय स्थान दिया गया। यहां का त्रिभाषा सूत्र इस प्रकार है - प्रादेशिक भाषा (प्रथम भाषा) - कन्नड, द्वितीय भाषा - अंग्रेजी और तृतीय भाषा - हिन्दी के रूप में उसका अनुसरण किया जा रहा है। यह सूत्र पहली कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक लागू किया गया था। परन्तू इस संदर्भ में हिन्दी भाषा को अन्याय ही हुआ है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। कर्नाटक में अंग्रेजी भाषा को जितना महत्व दिया है, उतना महत्व हिन्दी भाषा को नहीं है। क्योंकि कर्नाटक में पहली कक्षा से ही अंग्रेजी पढाई जाती है, लेकिन राष्ट्रभाषा हिन्दी मात्र छठी कक्षा से पढाई जा रही है। यहाँ के सरकार के अनुसार या मनोवैज्ञानिक सूत्र के अनुसार पता नहीं, कर्नाटक में पहली कक्षा से मातृभाषा कन्नड के साथ-साथ अंग्रेजी पढाई जाती है, पर राष्ट्रभाषा हिन्दी पढाई नहीं जा सकती। यह कितना विपर्यास है, यहाँ की शिक्षा पद्धति का। यह है कर्नाटक में राष्ट्रभाषा हिन्दी की दयनीय परिस्थिति।

सिर्फ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी दसवीं कक्षा तक पढाई जाती है। अब सोचने की बात है कि दस सालों तक मातृभाषा को ही पढाते समय बच्चे ठीक ढंग से मातृभाषा नहीं सीख पाते तो इस पाँच साल में एक अपरिचित भाषा को सिखाना खिलवाड ही मानना योग्य है। उसके उपरांत इंटरमिडिएट कालेजों में हिन्दी को विकल्प के रूप में रखा गया है। और वो भी सरकारी इंटरमिडिएट कालेजों में हिन्दी विषय ही नहीं है। ५० प्रतिशत से भी ज्यादा कालेज अनेक संघ-संस्थाओं द्वारा चलाये जाते हैं, वहाँ पर मात्र हिन्दी पढाई जाती है। इससे और एक संकट पैदा हुआ है कि माध्यमिक पाठशाला के हिन्दी भाषा के शिक्षकों ने हिन्दी में एम.ए., एम.फिल, पीएच.डी में अनेक स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्रास की है लेकिन उन्हें कोई पदोन्नति नहीं मिलती। क्योंकि उच्चतर सरकारी महाविद्यालयों में हिन्दी विषय ही नहीं है।

कुल मिलाकर हिन्दी का स्थितिगति इसी तरह आगे पढती गई तो एक दिन हिन्दी कहीं खो जायेगी। किसी और राष्ट्रभाषा राज्यभाषा की तलाश करनी होगी। इसका एक ही हल है एक रूप की शिक्षा पद्धति हो। **सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय, लक्कुंडी ५९११०२, बैलहोंगल, जि-बेलगाम (कर्नाटक)**

कविता

अंतिम संसार

डॉ.सुनीलकुमार परीट

किसी ने
गागर में सागर भर दिया
किसी ने
समाज में पाप भर दिया
एक दिन
पाप का गागर भर जायेगा
शायद अब भर गया होगा
विनाशकाले विपरीत बुद्धि
जैसा व्यवहार है अब
अंत समीप सा पहुँच गया है
कोई हिचकिचाहट नहीं
कोई इंकार नहीं
शायद
सबको मंजूर है फैसला
यह फैसला नहीं
अपने क्रियाकर्मों का फल है
अब जीना भी है दुश्वार
अब मरना भी असहाय
जटिल काल में अब
जीना मरना है समान
कहे अंतिम चरण
कहे अंतिम दौर
कहे अंतिम संसार
अब सबको मानना है
चाहे स्वीकार या अस्विकार
निश्चित तो है
अंतिम संसार। •

विवेकी राय के उपन्यासों सें चित्रित प्राकृतिक प्रकोपों की समस्या

डॉ.श्रीदेवी एस.

भारतीय कृषि व्यवस्था अधिकतर प्रकृति पर निर्भर रही है। इसलिए भारतीय खेती एक चौसर के खेल के समान मानी जाती है। बाढ़, सूखा, अनावृष्टि आदि प्रकोपों से ग्रामीण खेती व्यवस्था खतरे में रहीं है। बाढ से किसानों के जान - माल की हानि होती है। प्राकृतिक प्रकोपों से पीडित ग्राम जीवन की स्थितियों का चित्रण विवेकी राय के 'बबूल', 'लोकऋण' और 'सोनामाटी' आदि उपन्यासों में यथार्थ रूप से आया है।

'बबूल' में बाढ की यह भीषणता यथार्थ रूप से चित्रित ही है। उत्तर प्रदेश में गंगा - जमुना जैसी नदियों में हर साल बाढ़ आती है, जिससे हमीरपुर, गाजीपुर, बलिया, मिर्जापुर, वारणासी आदि गाँव बाढ की चपेट में आते हैं और उनकी लाखों रुपयों की हानि होती है। अतिवृष्टि से आने वाली बाढ से ग्रामांचलिक जीवन में तबाही मच जाती है। इस तथ्य को विवेकी रूप ने 'बबूल', उपन्यास में घुरबिन के माध्यम से स्पष्ट किया है। बाढ़ की चपेट के कारण घुरबिन की फसल नष्ट होना, उसके घरबार की चीज़ों का पानी में बह जाना, घुरबिन की हानि होना, उसका हमेशा ऋण में रहना, सालभर अनाज की समस्या का निर्मण होना, बाल - बच्चों का भूखों तड़पना आदि के माध्यम से विवेकी राय ने इस समस्या को मुखर बनाया है।

'श्वेत-पत्र' में बाढ का वर्णन आया है। बाढ़ के कारण ग्रामांचलिक जीवन की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए मास्टर जी कहते हैं, 'बाढ में घिरे ग्रामीणों का जमावड़ा प्रहुत विचित्र होता हैं। ... बाढ आकर और गाँवों को घेर कर ग्रामीणों को एक विचित्र प्रकार के अकमर्ण्य सुखाभास में झोंक जाती है।'[1] यहाँ बाढ के कारण निर्माण ग्रामांचलिक लोगों के निकम्मेपन और मज़दूरी की समस्या पर प्रकाश डाला है। 'सोनामाटी' - 1983, में बाढ से उत्पन्न समस्याओं का विस्तार से वर्णन किया है। बाढ के कारण यातायात का बन्द हो जाना, सरकारी नावों से यातायात का शुरू होना, स्कूल - कॉलेजों का बन्द हो जाना, आस - पास के घरों में पानी भर जाना, फसल का पानी में डूब जाने से घास की समस्या का निर्माण होना, पानी में डूब - डूबकर कच्ची फसल को छानकर चारा जमा करना, भीषण बाढ के कारण गाँव की पहचान खो जाना, पानी में बहकर आये साँप - बिच्छू के डसने का डर रहना आदि के रूप में यह समस्या विवेकी राय ने प्रस्तुत की है। बाढ के वारण बाहरी दुनिया से सम्पर्क टूट जाने पर हवाई सर्वेक्षण के हेतु हेलीकॉप्टर से मंत्री आते हैं, उन्हें देखकर रामरुप कहता है, 'ये जलती झोंपडियों पर हाथ सेंकनेवाले और सैर - सपाटा के रूप में हवाई सर्वेक्षण करनेवाले तथा राहत कार्य के नाम पर मनमानी लूट मचाने वाले तांत्रिक इस बाढ से कितने आल्हादित होंगे। बाढ उतरने पर शायद नमक दियासलाई, आटा और मिट्टी का तेल आदि छिड़कते यहाँ पहूँचे।'[2] बाढ ग्रस्त इलाके में दिये जाने वाले राहत कार्य पर यहाँ व्यंग्य किया गया है।

'समर शेष है' - 1988, में बाढ के कारण महुआरी गाँव में पानी घुसने से यातायात का बन्द होना, स्कूल में पानी भर जाने से स्कूल का बन्द होना, स्कूल में पानी भर जाने से स्कूल का बन्द होना, सामान्य जनों के जान - माल की हानि होना, बाढ़ग्रस्त गाँव में बीमारी फैलाना आदि समस्याएँ यहाँ निर्माण हो जाती हैं। पंड़ित संतोषी बाढ़ के कारण सुराज के आश्रम की स्थिति के बारे में कहते हैं, '... आश्रम को प्रबाढ से प्रहुत क्षति हुई थी। झोंपड़ी बह गयी थी।'[3]

इसके साथ - साथ विवेकी राय ने विवेच्य साहित्य में सूखे की भीषणता पर भी सोचा गया है। सूखे के कारण ग्रामांचल का प्रेहाल होना, पानी का प्रश्न निर्माण होना, जानवरों को घास न मिलना, वर्ष वे आगमन के लिए आँखें आसमान में गढ़ा देना आदि का वर्णन विवेकी राय के 'बबूल' और 'श्वेतपत्र' उपन्यास में किया गया है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में बाढ के कारण निर्माण भयावह स्थिति का और जान - माल की हानि का चित्रण विवेकी राय ने प्रस्तुत उपन्यासों में किया गया। पूर्वी उत्तर प्रदेश के बाढ और सूखे की स्थिति का यथार्थ चित्रण करके विवेकी राय ने ग्रामांचलों की आर्थिक स्थित पर यथार्थ रूप से चिन्तन किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. विवेकी राय - खेत पत्र, अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली, सं. १९९८, पृ. ११४-११५.

२. विवेकी राय - सोनामाटी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं. १९९५, पृ. ४५५.

३. विवेकी राय - समर शेष है, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. १९८८, पृ. १७७.

फाकल्टी, हिन्दी विभाग, आल सेइन्स कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम

प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ

डॉ.षीबा एस.एल.

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी के ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने अपने कथा साहित्य में युग-चेतना को गहराई से अभिव्यक्त ही नयीं किया है, वरन् प्रभावित भी किया है। उनकी लोकप्रियता का कारण केवल रचना प्रक्रिया नहीं है वरन् अभिव्यक्ति का व्यापक प्रभाव है। प्रथम कहानी संग्रह सोजेवतन से ही ये विदेशी सच्चा ही नहीं वरन् देशी सामन्तों और समाज के ठेकेदारों के विरुद्ध खडे रहे हैं और उन्हें व्यापक जनसमर्थन मिला है। सरकारी नौकरी से त्यागपत्र उनकी उसी चेतना का प्रमाण है। सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था के विरुद्ध जनमत को प्रभावित करनेवाले गिने-चुने कथाकारों में प्रेमचंद का उल्लेख किया जाता है। प्रेमचन्द के लेखन की यह सामाजिक प्रतिबद्धता ही उन्हें उपन्यास सम्राट के विरद से विभूषित करती है। भारतीय समाज के यथार्थ का जितना सफल चित्रण प्रेमचन्द ने किया है और सुधारवादी पुनर्जागरण कालीन आन्दोलनों को आत्मसात् करते हुए जिस सुधार का मार्ग उन्होंने निर्दिष्ट किया है उसका प्रभाव तद्‌युगीन समाज पर पड़ना स्वाभाविक था।

प्रेमचन्द के कथा-साहित्य में विशेषतः कहानियों में समस्याओं का सूक्ष्म अंकन हुआ है। प्रेमचंद की दृष्टि जिस ओर गयी है उनमें कृषक, मज़दूर और नारी वर्ग प्रमुख है। नारी के रूप में प्रेमचंद ने वर्गीय दृष्टि से विवेचन नहीं किया है। वे नारी-मात्र को एक ही वर्ग में रखते हैं। यही कारण है कि सामान्य मज़दूर मुलिया को सुखी और संपन्नता में पत्नी वसुधा को दुःखी दिखाते हैं। उनके अनुसार नारी में त्याग, स्वाभिमान, दया, ममत्व, क्षमा, सहनशीलता होनी चाहिए लेकिन प्रतिदान में उसे सामाजिक स्वतंत्रता और पुरुष का निरछल प्रेम मिलना चाहिए। प्रेम के बिना नारीत्व अधूरा रहता है। प्रेमचन्द की अधिकांश कहानियों में नारी के इसी रूप की अभ्यर्थना भी हुई है और इससे वंचित नारी के प्रति उनकी सहानभूति भी रही हे, वह चाहे जिस वर्ग की हो। इसलिए प्रेमचंद ने ग्रामीण नारी और नगर नारी में भेद नहीं किया है।

प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में विभिन्न पात्रों के माध्यम से समाज की भिन्न-भिन्न समस्याओं का उल्लेख किया है। प्रेमचन्द जी ने अपने पहले उपन्यास 'वरदान' में नारी पात्र विरजन के माध्यम से अनमेल-विवाह की समस्या पर दृष्टि डाली है। इसी प्रकार 'प्रतिज्ञा' उपन्यास में पूर्वा के माध्यम से विधवा-समस्या पर कुठाराघात किया है। 'सेवासदन' उपन्यास में अपने विभिन्न पात्रों के द्वारा 'दहेज' अनमेल-विवाह और वेश्या समस्या पर दृष्टिपात किया है। इसमें सुमन को दहेज के अभाव में अनमेल-विवाह होने के कारण मज़बूरी में 'वेश्या' बनना पडता है। इस तरह प्रेमचन्द जी ने सुमन के द्वारा वेश्या समस्या का विस्तारपूर्वक चित्रण किया है। निर्मला उपन्यास में व्यक्त निर्मला की प्रमुख समस्या दहेज की है। हिन्दु-समाज की वह कुप्रथा एक भीषण सामाजिक समस्या है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने विवाह के प्रश्न को ही एक मात्र प्रमुखता दी है। दहेज-प्रथा के कारण निर्मला की ट्रेजडी होती है। प्रेमचन्द जी ने दहेज की प्रथा के विरोध में जहाँ भी अवसर मिला है कडे शब्दों में अपने विचार प्रकट किये हैं। इसी प्रकार प्रेमचन्द ने अपनी अनेक कहानियों में विधवा-विवाह अनमोल विवाह और दहेज-समस्या का चित्रण किया है।

वर्तमान में यह विडंबना है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं जैसा सूत्र वाक्य जिस देश ने दिया उसी देश में बहु-बेटियों के जल मरने की खबरें प्रतिदिन देखने को मिलती हैं। प्रेमचन्द युग में नारी केवल पुरुष के अत्याचारों से पीडित नहीं थी, वरन् वैधव्य को उसके जीवन के लिए वह अभिशाप था, जिसके चलते वह सामाजिक मान्यताओं की दृष्टि में भी पतित हो जाती थी। उपन्यासों की भाँति प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में भी वैधव्य के दुःखों का चित्रण करते हुए नारी-समाज में जागरण लाने का प्रयास किया है। 'धिक्कार' कहानी की 'मानी' तीन आदमियों का काम अकेले करती है, फिर भी विपत्ति में आश्रय देनेवाले चाचा-चाची उससे प्रसन्न नहीं होते। 'बेटोंवाली विधवा' में तो फूलमती को स्वयं अपने बेटों द्वारा कष्ट पहुँचाया जाता है। 'नैराश्य लीला' शीर्षक कहानी में कैलाश कुमारी के रूप में एक ऐसी बाल-विधवा का चित्रण है, जो बारह वर्ष की आयु में ब्याह दी जाती है और विवाह का अर्थ तक समझने की आयु से पूर्व ही विधवा हो जाती है। 'नरक का मार्ग' शीर्षक कहानी में अनमेल विवाह को इस समस्या का कारण बताते हुए कहा है कि वृद्ध अपनी युवा-पत्नी को सदैव सन्देह की दृष्टि से देखता है। 'दो कब्रें' कहानी में आर्थिक कारणों को वेश्यावृत्ति के मूल कारणों में एक बताया गया है। 'लाँछन' कहानी में प्रेम का अभाव, आर्थिक स्थिति का ठीक न होना, घर से स्त्री का बहिष्कार तथा कुटनी, दलालों और शोहदों का माया-जाल आदि कारणों को इस वृत्ति केलिए उत्तरदायी बताया गया है। 'निर्वासन' कहानी की नायिका मर्यादा गंगा-स्नान के अवसर पर भीड़ के कारण अपने पति से अलग हो जाती है। लेकिन वापस आने पर पति उसे स्वीकार नहीं करते वह कहता है - 'जिस स्त्री पर दूसरी निगाहें पड चुकी, जो एक सप्ताह तक न जाने कहाँ और किस दशा में रहीं, उसे अंगीकार करना मेरे लिए असंभव है'।

‘आगा-पीछा’ कहानी की नायिका श्रद्धा भी कोकिला नामक एक वेश्या की पुत्री है, परन्तु श्रद्धा के जन्म के बाद कोकिला वेश्यावृत्ति त्याग देती है।

प्रेमचन्द जी ने अपने कथा साहित्य में पारिवारिक विघटन एवं उसमें उत्पन्न सामाजिक असंतुलन साम्प्रदायिक एवं स्त्रियों में आभूषण की समस्या आदि अन्य सामाजिक समस्याओं की ओर भी ध्यान केन्द्रित करने का सफल प्रयास किया है। ‘गबन’ उपन्यास की दो प्रधान समस्याएँ हैं। एक स्त्री का आभुषण प्रेम और दूसरी मध्यम श्रेणी के आयवाले नवदम्पति की मनोरंजन के व्यय साध्य साधनों में अनुभवहीन संलग्रता, उनका फैशन और विलास प्रेम। ‘गोदान’ में प्रेमचन्द जी न नारी को चार विशेष रूपों में चित्रित किया है। एक वह रुप है जो धनियाँ के चरित्र में पाया जाता है। दूसरी नारी का रुप झुनिया, सिलिया और नौहरी में द्रष्टव्य है जो खुलकर पुरुष से प्रेम करने पर दण्डित की जाती है। तीसरे प्रकार की नारी का प्रतीक ‘मालती’ है जो पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगी हुई है। चौथी नारी ‘दुलारी’ के रुप में चित्रित है, जो विधवा होने के बाद नमक तेल की छोटी-सी दूकान खोलकर गाँव में रहती है, और खूदखोरी करती है। निस्संदेह मन चारों ही स्त्रियों में भारतीय नारी का जीवन एक बहुत बडी समस्या बना हुआ है। गोदान के पूर्व उनकी भिन्न भिन्न कहानियों में नारी जीवन के ये रुप मिलते हैं।

भारतीय स्त्री वैसे तो कुल देवी कही जाती है लेकिन कुछ कारणों से काफी पहले ही उसकी स्थिति गिर गयी थी। पुरुष ने नारी-जाति के अधिकारों का अपहरण कर लिया था। स्त्री-पुरुष के बीच असमानता की एक दीवार खडी हो गयी थी, लेकिन राष्ट्रीयता और सद्‌बुद्धि की जो लहर राष्ट्रीयता और सद्‌बुद्धि की जो लहर राष्ट्रीय आन्दोलनों के दौरान आई उसने इस असमानता को पाटने का काम शुरू कर दिया। पुरुष के शासन से मुक्त होने की चेतना गलत नहीं है। पुरुष को भी इसमें उनक साथ देना चाहिए, उन्हें हर एक विषय में पुरुषों के समान अधिकार होना चाहिए और इसका निर्णय देवियों पर ही छोड़ देना चाहिए कि वे अपने हितार्थ जो स्वत्व चाहे ले लें। निष्कर्ष यह कि प्रेमचंद स्त्रियों की क्षमता के प्रति पूर्ण आश्वस्त हैं। इन्हें विश्वास है कि वे जिस क्षेत्र में कदम रखेंगी, सफल होगीं।

संदर्भ सूची:

१. *प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी समस्यायें - ड़.सौ.मेहर दत्ता पाथरीकर, शैलजा प्रकाशन, कानपुर*

२. *समकालीन हिंदी कहानियों नारी के विविध रुप - डॉ.घनश्यामदास भुतडा, शैलजा प्रकाशन, कानपुर*

प्राध्यापिका, आलर्स सेइन्ट्स कॉलेज

काव्यांजलि गीत

राजघाट की पावन माटी

जगन्नाथ विश्व, मनोबल, २५ एम.आई.जी.,
हनुमान नगर, नागदा जं. (म.प्र)

राजघाट की पावन माटी मस्तक तिलक ललाम है
धन्य-धन्य ओ बापू जग के बारम्बार प्रणाम है

त्याग तपस्या के योगी तुम अनुरागी बोल थे
तन फकीर, मन राजा था जो कुछ थे अनमोल थे
न्याय तुला पर सदा सत्य के खरे उतरते तोल थे
चैन अमन के महा पूजारी संस्कृति के भूगोल थे
हे बापू! चिर सदा सादगी की भक्ति अविराम है
धन्य-धन्य ओ बापू जग के बारम्बार प्रणाम है

मानवता से प्रेम तुम्हें था तुम युग के इतिहास थे
गीत अहिंसा के गायक तुम नूतन विश्वास थे
बीहड़ में तुम नये सृजन पतझड़ में मधुमास थे
ढाई पसली के शरीर में तुम राष्ट्र की सांस थे
हे बापू! सन्देश तुम्हारा जीवन चिर पैगाम है
धन्य-धन्य ओ बापू जग के बारम्बार प्रणाम है

पीते रहे जहर जीवन भर, पर अमृत की धार थे
जग सारा झंकृत हो जाये वह बेजोड़ सितार थे
अंधकार के महाप्रलय में तुम दिनकर अवतार थे
रामराज्य की मनचाही पर तुम स्वप्न साकार थे
हे बापू! गुदड़ी के लाल युग युग कर्म अनाम है
धन्य-धन्य ओ बापू जग के बारम्बार प्रणाम है

हृदय तुम्हारा था लेकिन उसमें हर दिल की पीर थी
जन्म तुम्हारा था लेकिन उसमें सबकी तकदीर थी
तन मन धन सब मुक्त लुटाया खुला हुआ मन द्वार था
भाग्य तुम्हारा था लेकिन हर मानव साँझीदार था
हे बापू! सौसंध देश को अब आराम हराम है
धन्य-धन्य ओ बापू जग के बारम्बार प्रणाम है •

कविता

डॉ.रामसनेहीलाल शर्मा, यायावर डी.लिट.८६,
तिलकनगर, बाईपासरोड, फीरोजाबाद २८३२०३

मन को लगता था आवारा शायद जल धारा बागी है
बोली लहरें इस बार समन्दर थाम किनारा बागी है
टूटी हाथों की हथकड़ियाँ सारे दरवाजे टूटे हैं
ये दीवारें हाँफीं शायद यह पूरी कारा बागी है
सूरज की तम से सन्धि हुई छिप बैठा चाँद कहीं जाकर
नभ की छाती पर चमक रहा अपना ध्रुवतारा बागी है
सब राहें, कानन, घर, वीहड है ये सहमी पगडण्डी भी
अब सारी पूंछ रही है यह पागल पथहारा बागी है।
जब आप चलें तो पीछे से यह पागल आँसू भी निकला
संयम कहता है आँखों का यह राजदूलारा बागी है
कानों-कानों अफवाह उड़ी राजा ने खाली घास यहां
छीना है भोजन घोड़े का तब से बेचारा बागी है
क्यों कागज काले करते हो कविता छोड़ो यायावर जी
हम कहते तो हैं मन से पर यह दर्द हमारा बागी है।

*** *** ***

दूधिया चाँदनी, ये खुली अंजुरी,
अनबुझी प्यास है और क्या चाहिए
रुप का कृष्ण है, दृष्टि की गोपियाँ,
यह महारास है और क्या चाहिए
मैं लिखूँ गीत गोविन्द इस देह पर,
तृप्ति के सिन्धु में डूबलें कण्ठ तक
मुक्त है यह गगन, मुक्त है तन-बदन,
मुक्त उच्छवास है और क्या चाहिए
रुढ़ियाँ सिर झुका के खड़ी हैं यहाँ,
वर्जनायें खड़ी हाथ बाँधे हुए
कूकतीं कोयलें, आम बौरा गये,
पूर्ण मधुमास है और क्या चाहिए
ये नई भागवत के सृजन का समय
या कि गीता गई, आँख नम हो गयी
प्राण गलने लगे नेह के ताप से,
दर्द का व्यास है और क्या चाहिए
नीति की जनकी का हुआ अपहरण,
उम्र रावण से रड़ते हुए कट गयी
हर कलमधर यहां राम है
जिन्दगी राम-वनवास है और क्या चाहिए
देश के रक्त में कालिमा घोलने
तुम बढ़े तो दिखाएँ सहमने लगीं
पास में है घृणा का ये पाथेय
फिर पंगु इतिहास है और क्या चाहिए। •

विचारधारा एक कंडीशनिंग

सीताराम गुप्ता

हम हर व्यक्ति को उसकी विचारधारा से ही पहचानते अथवा परखते हैं लेकिन किसी भी व्यक्ति की विचारधारा वास्तव में एकदम मौलिक नहीं होती। हम कोई भी विचारधारा अपनी शिक्षा-दीक्षा अथवा अपने परिवेश के प्रभाव से ही ग्रहण करते हैं। जीवन के हर मोड़ पर अथवा अवस्था में हमारा कोई न कोई रोल मॉडल भी अवश्य होता है। एक तरह से हम उनकी विचारधारा को ओढ़ लेते हैं। यह हमारी वास्तविक विचारधारा नहीं होती अतः इसे सही या गलत कहना भी बिलकुल संभव नहीं। वो दूसरी बात है कि हमें वह बिलकुल सही और संतुलित लगती है। जब भी हम किसी एक विचारधारा से बंध जाते हैं तो हम संकुचित व सीमित अवश्य हो जाते हैं। सही या गलत की हमारी धारा व्यक्तिगत अथवा सामूहिक कंडीशनिंग मात्र है और कुछ नहीं।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। सही या गलत की धारणा भी परिवर्तनशील है अतः व्यक्तिगत अथवा सामूहिक कंडीशनिंग में बदलाव के परिणामस्वरूप जो नई विचारधारा उभरकर आदी है वह किसी भी दृष्टि से गलत या अप्रासंगित नहीं कही जा सकती। समाज अथवा व्यक्ति के हित में किसी भी विचारधारा में बदलाव अथवा सुधार स्वीकार्य होना चाहिए। ज़्यादातर राजनीतिक पार्टियों की एक विशेष विचारधारा होती है और उनके सदस्य आँखें मूँदकर उस पर चलने को बाध्य होते हैं। कभी भी असंख्य लोगों की विचारधारा एक और केवल एक नहीं हो सकती। जब असंख्य लोग आँखें मूँदकर एक ही विचारधारा पर चलते हैं तो इसका सीधा सा अर्थ है कि उनकी अपनी कोई विचारधारा है ही नहीं। लोक कल्याण के नाम पर सहमति होना अच्छा है लेकिन आज विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधि अथवा कार्यकर्ता जिस तरह के अनर्गल बयान दे रहे हैं इससे उनकी अधभक्ति ही नहीं विचार शून्यता का भी पता चलता है। आज कई राजनीतिक पार्टियों की विचारधारा भी एकदम सांप्रदायिक, अलगाववाद को बढ़ावा देने वाली तथा अत्यंत संकीर्ण है जिससे सावधान रहने की ज़रूरत है।

ए.डी-१०६-सी, पीतमपुरा, दिल्ली ११००३४

गिरिजाशंकर शर्मा की तीन कविताएँ

कामना की गाय

सांझ के सूने कुंए सा मन/काटने को दौड़ता है

सूर्य घसियारा कटी अंगुली लिए
काटता है फिर दिवस का घास
भय अंधेरा सा सिमट कर सून्य में
आ रहा है आहटों के पास
चाह् शिशु जैसे जननि स्तन/दूध पीने को
पकड़ता छोड़ता है।

लौट कर फिर आ रहो निज थान पर
स्वयं बंधने कामना की गाय
ह्रदय बछड़े सा खड़ा है द्वार पर
एक टक सा देखता निरुपाय
होसला भी एक निमंम ग्वाल वन
दूथ दुहने बांधता है, छोड़ता है...

•

प्रतिद्वन्दी गाँव

प्रतिद्वन्दी हो रहे शहर के
आसपास के गाँव....

गए गीत गये ठूठों के
जीत गए कंटक
जहर नहीं अपना उदभव
कह रहीं अमरकंटक

मुझे नमंदा कहो कह रहा
एक सूखा तालाव...

पानी भरने लगे मेघ सब
बेशाखों के गेह
फिर भी हरी नहीं दिखती है
बसुन्धरा की देह

जब से जन्म लिये है तब से
लट पर ही है नाव....

•

धूप वाले दिन

रात में भी सालते है
धूप वाले दिन...

दृष्टिगोचर नहीं होते मेघ
प्रेम के / जो घूमते थे उर गगन में
शून्य में खोये हुए स्वर शब्द
जाग्रत फिर से लगे होने विजन में
तिमिर में भी तड़ित से लगते
नाम वाले रूप वाले दिन...

ढ़ो रही बंधव्य का है भार
भार बन कर स्वयं अभिलाषा
ढूंढ़ने को आज भी कटिबद्ध
है कहां विश्वास? नव आशा

आज भी विकृत हुए चेहरे
कर स्मरण विद्रूप वाले दिन...

•

राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मान 2016

श्रीमती आर.राजपुष्पम
(मंत्री, के.हि.सा.अकादमी)
अनुवादक : 'खुलेदृश्य'
(मलयाल से हिन्दी)

डॉ.श्रीदेवी एस.
(ऑल सेइन्स कॉलेज,
तिरुवनन्तपुरम)
....

एस.बी.टि. हिन्दी साहित्य पुरस्कार 2016 (के.हि.सा.अकादमी)

डॉ.श्रीदेवी एस.
(ऑल सेइन्स कॉलेज,
तिरुवनन्तपुरम)
मौलिक ग्रंथ : 'बूदें' (कविता)

डॉ. प्रमिदा के.
(कॉपरेटीव कॉलेज, कण्णूर)
गवेषण ग्रन्थ : 'आधुनिक हिन्दी काव्य में युद्ध और शांति'

आलेख

पर्यावरण और विलुप्त होती मौरैया

डॉ.सुरेश उजाला

वे सभी तत्व जिन से हम चारों ओर से परिवेष्ठित हैं पर्यावरण के अंश हैं। इन अंगों के अभाव में हम कदाचित जिन्दा नहीं रह सकते। हमारे चहूँ ओर वायुमण्डल है हम पेड-पौधों के बीच रह रहे हैं, पशु-पक्षियों के मध्य रह कर ही हम अपना जीवन चला रहे हैं। पानी ग्रहण करते है और प्रकाश में रहना रहम को अच्छा लगता है। ये सभी कुछ पर्यावरण के अंश और अंग हैं। रुक-दूसरे से इन सभी का धनिष्ठ संबंध है। ये समी एक-दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। एक-दूसरे के बिना जीवन दूभर हो जाता है। यदि पेड-पौधे न हो तो आदमी के मुख्र से निकलने वाली कार्बन-डाइ-अक्साइड वातावरण में इतनी ज्यादा हो जायेगी कि सांस लेना तक दूभर हो जायेगा, और आक्सीजष के बिना आदमी जीवित नहीं रह सकता। आदमी के मुहँ से निकली कार्बन-डाई-आक्साइड को पेड़-पौधे ग्रहण करते हैं तथा आक्सीजन देते हैं, जो मनुष्य के लिए जीवन दायिनी है। पानी के बिना भी व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता। पर्यावरण का संतुलन बनाये रख्रने से कीडे-मकोडो की भी अहम् भूमिका है। हानि-कारक कीडो-मकोड़ों को पक्षी ख्राकर-अपनी भूख्र शान्त करते हैं। साथ ही साथ अन्य पेड़-पौधों को सुरक्ष प्रदान करते हैं। रुक उदाहरण देकर अपनी बात को पुष्ट करता हूं-एक बार चीन में पाक्षेयों की संख्या अधिक हो जाने के कारण फसल का बहुत नुकसान हो जाता है। लोगों की शिकायत पर वहाँ की सरकार ने पक्षियों को मारने के आदेश पारित कर दिये। दूसरे वर्ष कीड़ों की अधिक संख्या हो जाने से फसल आधी हो गई, तीसरे वर्ष ख्रेत में बोचे गये बीज को ही कीड़े नष्ट करने कभी जिससे फसल ही ख्रत्म हो गई। सरकार को पुनः पक्षियों को दूसरे स्थानों से लाकर पालने के आदेश पारित करने पड़े। ताकि पर्यावरण का संतुलन बना रहे। अतः इस दृष्टान्त से स्पष्ट होता है कि पर्यावरण के लिए एक-दूसरे की कितनी आवश्यक्ता है। ये सभी मिलकर एक ऐसा वातावरण तैयार करते हैं, जो सभी केलिए कल्याणकारी है।

विगत कुछ वर्षों से गौरैया की संख्या निरन्तर कम होती जा रही है। जो पर्यावरण के लिए चिन्ता का विषय है। आज रिद्ध कोओं आदि भी बहुत कम दिख्राई पड़ रहे हैं रिद्ध तो भारत में दिख्राई ही नहीं पड़ रहे। गौरैया एक छोटी सी हल्के भूरे रंग की होती है। शरीर पर छोटे-छोटे पंख्र, पीली चोंच और पैरोकं का रंग भी पीला होता है। नर गौरैया के गले में काले रंशके निशान होते है। गौरैया की लम्बाई लगभग चौदह से पन्द्रह से.सी. की होती है। ये मानव द्वारा निर्मित भवनों के अन्दर या उसके आसपास रहती हैं। इसको हर तरह की जलवायु पसंद होती है। पहाडी इलाकों में गौरैया कम दिख्राती है। गाँव कस्बों और नगरों के समीप इनकी जनसंख्या अधिक होती है। नरगौरेया का सिर ऊपरी तथा नीचे का हिस्सा भूरेख्रा का होता है। साथ ही इसकी चोंच व आँख्र पर काला व भूरा रंग आंकित होता है। कहीं-कहीं नर गौरैया को चिरोटा या चिड़ा कहते है। मादा गौरैया को चिड़िया कह कर से बोधित किया जाता है। (शेष अगले अंक में)

१०८-तकरोही, पंडित दीनदयाल पुरम मार्ग,
इंदिरानगर, लख्रनऊ २२६०१६

लघुकथा

काठ

लेख्रक : वी. गोविन्द शेनाय

पुन्नन 'मशीन टूल्स' का मैनेजर है। 'टूल्स' में घरेलू उपकरण भी मिलाते हैं, काठ के भी। अधेड व्यक्ति हैं। पत्नी सुजाता बत्तीस साल की है। छः साल की बच्ची की माँ। परिवार में बुढ़िया सास भी है जो गृहस्थी संभालने में मदद करती है। पुन्नन प्रातःकाल नित्यकर्म से निवृत्त हो पत्नी से एकांत बात कुशल क्षेम की करता है और पत्नी नाशता और दोपहर का ख्राना बैग में संभाल करता सामने रख्र देती है, और पुन्नन 'मशीलन टूल्स' जाता है। रात गहराने पर लौटता है। पत्नी और माँ इन्तजार में बैठी मिलती है, उनींदी बच्ची भी। तनिक विस्तार से अब बातें होती है, बच्ची की स्कूली शिक्षा, माँ की डाक्टरी जाँच पडोस का ख्रटराग इत्यादि। पुन्न 'हाँ', 'हूँ' करता है, एकाएक संक्षिप्त टिप्पणी भी। आख्रिरी बोल पुन्न का यह होता है, संभाल कर व्यय करो। फिर रात गुजरती है, सर्वत्र विचित्र शांति। 'मशीन टूल्स' में चार सेल्समैन हैं। रुपये पैसे केवल पुन्नन का संपर्क है और लेख्राऐं बही वह स्वयं तैयार करता है और ऐसा तैयार करता है कि अब तक आयकर देना ही नहीं पडा है। अपराह्न। 'टूल्स' में पुन्नन सीने में दर्द अनुभव करता है धम्म से गिर पडता है कुर्सी से लुढक कर। बेहोशी की सी हालत में उसे अस्पताल पहुँचाया जाता है। घरवालों को सूचितं किया जाता है। सुजाता अस्पताल आ जाती है। जाँच होती है। मधुमेह जन्मय मूर्छा। दो दिन बाद रिहाई होती है। घर आने पर पुन्नन कहता है - नर्स ने अच्छी सेवा की। उससे धन्यवाद तक नहीं कहा - सुजाता ने कहा - सेवा मैंने की थी। तुमने मुझे नर्स समझा। पुन्नन पल भर को देख्रता रहा। फिर बोला-काफी ख्रर्च हुआ होगा।

होमियो इलाज होता तो अच्छा था। •

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का 36 वाँ सम्मेलन रिपोर्ट

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३६वाँ वार्षिक सम्मेलन प्रस् क्लब, तिरुवनन्तपुरम में १७ अक्तूबर २०१६ दुपहर २.३० बजे से ५.३० बजे तक संपन्न हुआ। सम्मेलन की शुरुआत औल सेइन्स कॉलेज की छात्रा श्रीक्कुट्टी की प्रार्थनागीत से हुई। डॉ.एस.श्रीदेवी (पूर्व मंत्री, के.हि.सा.अकादमी) ने सदस्यों का स्वागत किया। श्रीमती आर.राजपुष्पम पीटर ने (अकादमी का मंत्री) वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत किया। फिर उद्‌घाटन जस्टीस हरिहरन नायर जी ने दीप जलाकर किया। उन्होंने अकादमी के चेयरमान देशरत्न डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी और उनकी सेवाओं की खूब प्रशंसा की। यह भी कहा कि आज के युवकों केलिए नवतिवाले साहित्यकार नायरजी ज्वलंत उदाहरण ही है। नायरजी को शांतिदूत अवार्ड मिलने पर अतीव संतोष प्रकट किया और कहा कि वे बिलकुल इसके योग्य ही है। जल्दी ही भारत का सबसे बडा पुरस्कार मिलने की आशा भी की। क्योंकि वे नायर जी का शिष्य रहे थे।

अध्यक्ष देशरत्न डॉ.चन्द्रशेखरन नायर ने ३६ वर्ष तक अकादमी की उपलब्धियों के बारे में सविस्तार भाषण दिया। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी प्रचार केलिए उनकी संस्था का बहुत बडा हाथ है इसपर उन्हें अपार गर्व भी है। जब तक जीवित रहेंगे तब तक हिन्दी और गांधीजी के गौरव को बनाये रखेंगे ऐसा वादा भी किया।

के.पी.सी.सी प्रेसिडेंट श्री.वी.एम.सुधीर जी को जस्टीस हरिहरन नायर जी ने मद्यनिरोधन पुरस्कार दिया। यह अकादमी चेयरमान डॉ.चन्द्रशेखरन जी का गाँधीयन पुरस्कार था। उन्होंने कहा कि गाँधीजी अपने जीवन में मद्यवर्जन के बारे में बताते रहे, परिश्रम करते रहे लेकिन आज तक किसी सरकार ने इसे पूर्ण रुप से निरोधित न कर सके। मद्यनिरोधन केलिए सुधीरजी के सख्त प्रवृत्तन को नज़र में रखकर ही उन्होंने उन्हें 15,000/- रु. मंगलपत्र शील्ड भी सम्मानित किए। शौल पहनाकर उनका आदर भी किया गया।

सुधीरजी ने जवाबी भाषण में के.हि.सा. अकादमी अध्यक्ष और सदस्यों की खूब प्रशंसा की। मद्यनिरोधन पुरस्कार उन्हें बहुत अच्छा लगा क्योंकि आज इसका प्रचार बहुत बढ़ गया है और इस मद्य के द्वारा अनेक घरों की बरबादी भी हो रही है। उन्होंने यह भी कहा कि आज के.पी.सी.सी. केलिए कोई विशेष फण्ट नहीं है क्योंकि बदनामी के पैसों का स्वीकार नहीं करते हैं। इसलिए इस पुरस्कार के रुपये को के.पी.सी.सी. के फण्ट में रख देंगे जिससे कोई अच्छा कार्य हो सके।

देशरत्न डॉ.चन्द्रशेखरन नायर के 'राम को स्तुतियाँ' नामक ग्रंथ का लोकार्पण श्री.के. रामनपिल्लै ने नायर जी की खूब प्रशंसा करके किया था। उन्होंने कहा कि, राम के जीवन का तत्व आधुनिक काल केलिए बहुत ही आवश्यक और अनुकरणलायक भी है। किताब की पहली प्रति डॉ.विलक्कुडि राजेन्द्रन ने स्वीकार की। उन्होंने भी किताब के बारे में सविस्तार और बेखूबी परिचय दिया। उसे पढ़नेवालों को ज़रुर मन को शांति मिलेगी ऐसी आशा भी प्रकट की। उन्होंने पुस्तक की मुक्तकंठ प्रशंसा की। क्योंकि इस कलियुग में जहाँ नज़र डाले वहाँ अत्याचार और अनीति व्यापक रुप से दिखाई पड़ता है इस अवसर पर सबके दिल को सांत्वना देने लायक पुस्तक हाथ में आ गई है। वास्तव में यह सत्र बहुत ही हृदयस्पर्शी रहा था।

अगले सत्र में अकादमी के मुख्य संरक्षक जस्टीस हरिहरन नायर जी को अकादमी के चेयरमान द्वारा विशेष आदर सम्मान किया गया। पूर्व अम्बासडर श्रीनिवासन जी की अनुपस्थिति में उन्हें और किसी सभा में आदर करने का निश्चय किया। ये दोनों अपने-अपने क्षेत्र में अच्छी ढंग से विश्वस्त और कार्यनिरत रहे हैं। ऐसे समाज सेवियों का विशेष आदर सम्मान करना हमारा परम धर्म ही है। अध्यक्ष डॉ.नायरजी ने शॉल पहनाकर जस्टीस एम.आर.हरिहरन नायर जी का आदर किया और शील्ड भी प्रदान किया।

महर्षि चट्टम्बीस्वामी पर लिखे ग्रंथ 'महामुनी' के ग्रंथकार श्री. कैतक्कल सोमकुरुप को अकादमी चेयरमान डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी ने शॉल पहलाकर आदर किया। उन्हें 10,000/- रु और प्रमाणपत्र भी प्रदान किए। महर्षि चट्टंबीस्वामी के भक्त होने से हर वर्ष यह पुरस्कार नायर जी दे रहे हैं। श्री. कैतक्कल सोमकुरुप जी भी महर्षि चट्टंबीस्वामी के जीवन से अटूट नाता रखनेवाले हैं। उनके जीवन मूल्यों को समाज में फैलाने का श्रम करनेवाले है। उन्होंने चट्टंबीस्वामी के बारे में अच्छा भाषण दिया और अकादमी चेयरमान की सेवाओं की स्तुति भी की।

देशरत्न डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी को विश्वशांति आन्दोलन ट्रेस्ट मीरट के महामंत्री पद्‌मश्री डॉ.रवीन्द्रकुमार द्वारा शांतिदूत सम्मान दिया गया। वे पत्नी समेत आए थे। नायर जी द्वारा पद्‌मश्री रवीन्द्रकुमार जी को शोल पहना दिया और शील्ड भी सम्मानित किया। उनकी पत्नी श्रीमती कमलेश्वर जी को अकादमी के मंत्री राजपुष्पम जी ने शॉल पहनाकर आदर किया। पद्‌मश्री रवीन्द्रजी ने के.हि.सा.अकादमी

कविता

सूर्यदेव की सांत्वना

वी.आनन्दवल्ली, सौपर्णिका,
विनोबानिकेतन पी.ओ. (via) आर्यनाडु, तिरुवनन्तपुरम

प्राण प्यारी! प्रिय सखी! पत्मिनी!
प्राण मुझमें अर्पण करनेवाली तू।
भूमि में मेरी ज्योति फैलते समय
कामिनी तू खिल उडती सादर, धीरे।

पंकज होकर जन्म था तू तो भी
पंक-लेश भी मुझे नहीं लगा है।
धन्यतायें पैदा हुआ करती हैं
धरा की पतितत्व में ही सदा।

सुप्रिये! सुप्रभात प्रणयिनी!
विप्रलंभ श्रृंगार से दुःखिनी!
रात भर तप करनेवाली तेरी
श्रेष्ठ राग तो धन्य है रागिणी।

नित्य-सत्य मेरे पतिभाव से
नित्य मंगल्य भाग्य पाया तू ने
दीर्घमंगल्य भाग्य ही भूमि में
स्त्रीजनों का महाधन व पुण्य भी।।

और एक अर्धगोल भी पहुँचना ही
और एक दिन की सृष्टि करना वहाँ
कमल खिलता नहीं वहाँ फिर भी मेरा
संगम समष्टि को ज़रूरी है।

वृष्टि से घोर ताप देने से भी
इष्टलाभ तुझे नहीं प्राप्त है।
अष्टरागी पुरुष समान ही
कष्टताये तुझे दे रहा हूँ मैं।

तो भी कोई परिभव तो नहीं
आश्चर्य है तेरी यह सहिष्णुता
प्रातः संध्या में मेरे दर्शन करने
प्राप्ती की ओर बाट जोहती रहेगी तू।

धरा में बधुवों का आदर्श तू
स्वर्ग लोक की परिजातोपमा।
सुमन-वर्ग की राजराजेश्वरी
कोकिलाओं की उत्सव-दायिनी।। •

फागुन का पाहुन त्यौहार

जगन्नाथ विश्व

आज प्रकृति ने कंचुकि फेंक दी उतार।
आया फिर फागुन का पाहुन त्यौहार।

बांसुरिया फूंक रही पगली पुरवाई,
कोयलिया कूंहुक रही बैठी अमराई,
फूल चटके चम्पा और चमेली अनार,
आया फिर फागुन का पाहुन त्यौहार।

घुला रंग केसर कंचन की पिचकारी,
धूम मची धरती पे शोभा बिलहारी,
उड रहा गुलाबी गुलाल का गुबार,
आया फिर फागुन का पाहुन त्योहार।

किसान संग खोले ज्यूं गाँव की गोरी,
कृष्ण मगन नाचे संग राधिका भोरी,
प्रीत भरी रीत जगत जन्मी हजार,
आया फिर फागुन का पाहुन त्यौहार।

आभा गोरे तन से निकल रही हल्की,
गुलाम से बदन लिपटा याद नहीं कल की,
ऐसा दिन वर्ष में आता है इक बार
आया फिर फागुन का पाहुन त्यौहार •

अध्यक्ष और अकादमी के बारे में सविस्तार भाषण दिया। इसके बाद उन्होंने नायर जी को शॉल पहनाया, सुवर्ण पदक पहनाया और शांतिदूत प्रमाणपत्र भी दिये।

फिर प्रो.शमशाद बेगम आर. को उनके लेख (राजभाषा भारती में प्रकाशित) 'राजभाषा हिन्दी की आवश्यकता' नामक लेख के विदक्त प्रयोग केलिए एक हज़ार रुपये और प्रमाण पत्र डॉ.नायरजी द्वारा दिया गया।

अगला सत्र एस.बी.टी. मुख्य कार्यालय पूजप्पुरा का साहित्य पुरस्कार का था। एस.बी.टी.राजभाषा विभाग के मुख्य प्रबंधक डॉ.कुलदीप सिंह जी ने, मौलिक ग्रंथ केलिए - "बूँदें" - डॉ.श्रीदेवी एस. (औल सेइन्स कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम) को 10,000 (दस हज़ार) रुपये; शोध ग्रंथ केलिए - "आधुनिक हिन्दी काव्य में युद्ध और शांति" - प्रो.प्रमिदा के. (को-ओप्परेट्टीव कॉलेज, कण्णूर) को 10,000 (दस हज़ार) रुपये और प्रमाणपत्र भी सम्मानित किए।

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं अनुवादक तथा केन्द्र साहित्य अकादमी के पुरस्कार जेता डॉ.के.सी.अजयकुमार जी ने कृतज़ता ज्ञापन किया। सम्मेलन का संचालन रंजिनी ने किया था।

सभा में उपस्थित सौ प्रेक्षकों को चायसत्कार की व्यवस्था की गयी थी। शाम को ५.३० बजे राष्ट्रगीत के साथ समारोह का सुंदर समापन हो गया।

जय हिंद, जय हिन्दी

मंत्री, के.हि.सा. अकादमी

डॉक्टर

कहानी

श्रीमती वन्दना सक्सेना

हैलो डॉक्टर कहाँ से आ रहे हो? उसे आता देख लोगों ने पूछा? किसकी दवाएँ ला रहे हो? उसने कहा-डिस्पेंसरी से आ रहा हूँ और साहब की दवा ला रहा हूँ। दफ्तर में लोगों ने उसका नाम डॉक्टर रख छोड़ा है, क्योंकि वह दफ्तर का काम कम करता है, दवा लाने का काम ज्यादा। वह रोज सुबह दफ्तर आने के बदले घर से सीधा डिस्पेंसरी जाता है। दफ्तर के सारे अधिकारियों की दवाऐं झोले में लाता है। फिर हर अधिकारी के कमरे में जाकर दवा देता है। साथ ही यह भी पूछता है, कि कल कौन-सी दवा लाना है। ताकि अधिकारियों के टच में बना रहे। काम करें न करें नौकरी चलती रहे। उस पर आँच न आए।

अधिकारियों को भी खुद, बीबी-बच्चों की दवा बैठे-ठाले मिल जाती है। उन्हें न डिस्पेंसरी जाना पड़ता न आना बस पर्चा दे दिया, वह दवा डॉक्टर से लिखवाकर लेता आता है। सब मुसीबतों से छुटकारा मिल जाता है। इसलिए अधिकारी भी उससे कुछ न कहते। अधिकारी क्या वह तो दफ्तर के कर्मचारियों की भी दवाऐं लाने को मना नहीं करता था। इसलिए कोई उससे कुछ कहता नहीं था। कौन पेट्रोल खर्च करके डिस्पेंसरी जाए, लाइन लगाए, फिर दवा लाए। इसलिए डॉक्टर को सब पकड़े रहते हैं। डॉक्टर का कोई अरजेंट काम तो तो वह भी कर देते। दरसआल हर दफ्तर में एक न एक तो ऐसा होता ही है, जो दफ्तर का काम करें न करें बाहरी काम तो कर ही देता है। डॉक्टर की वर्षों हो गए यह काम करते-करते।

अब स्थिति यह है कि डॉक्टर को सारे रोंगों की दवाएँ याद हो गयी है। दफ्तर की चिट्‌ठी-पत्री, फाइल के बारे में वह भले ही न बता पाए पर किस रोग में कौनसी गोली, केप्सूल दी जाती हैष तत्काल बता देता है। यही नहीं दफ्तर में किसी को कोई तकलीफ हो जाए तो वह अपने झोले से दवा निकाल कर दे देता क्योंकि वह जिसकी जो दवा लाता वह तो दे ही देता पर जो एक्स्ट्रा दवा डिस्पेंसरी से लाता वह झोले में रखे रहता। खासतौर पर रोजाना काम आने वाले पेनकिलर, ट्यूब, टॉनिक तो रखे ही रहता। तफ्तर में किसी का भी कुछ भी हो, डॉक्टर दवा दे देता। इस तरह वह दफ्तर का कर्मचारी कम डॉक्टर ज्यादा बन गया। डिस्पेंसरी के भी सारे डॉक्टर, कर्मचारी उसके घनिष्ठ बन गए। डिस्पेंसरी के कर्मचारियों के काम भी दफ्तर से कराकर ले जाता। इसलिए वहाँ के डॉक्टर/कर्मचारी भी उससे बहुत खुश रहते। डिस्पेंसरी/दफ्तर दोनों जगह उसने अपनी पैठ गहरी कर रखी थी। फिर 'सैंया भये कोतवाल अब डर काहे का'।

डॉक्टर की जिन्दगी मजे में चल रही थी। दफ्तर में काम करें न करें पूरी तनख्वाह मिल ही रही है। खुद घर में कोई बीमार पड़े तो दवाईयाँ तो खरीदनी पड़ती ही नहीं थी। सारी दवाईयाँ डिस्पेंसरी से मिल जाती थी। बची-खुची दवाईयाँ डिस्पेंसरी के चारों तरफ बनी दुकान से दुकानदारों को आधे मूल्य में बेंच देते डॉक्टर। कुछ ऊपरी मिल जाता। सूखी तरख्वाह से गुजारा कैसे हो? कुल मिलाकर डॉक्टर का सब कुछ बढ़िया चल रहा था। दवा तो फोकट में मिल ही जाती थी। लोगों ने कहा दवाई क्यों बेंचते हो? डॉक्टर बोला-दवा के साथ दारु भी तो चाहिए। दवा के साथ-साथ दारु भी तो देनी पड़ती है? तभी तो नौकरी ठीक-ठाक चल रही हे। ठीक भी है, नौकरी ठीक चलेगी तभी तो घर चलेगा। इतनी तनख्वाह और कौन देगा? जिन्दगी मजे से चल रही है।

राम-दाम-देंड-भेद का पर्याय है डॉक्टर? कैसे भी हो सबको पटाकर रखना है। नौकरी सही चलती रहेगी। दवा आधे-पौने में बेंचकर पानी-बीड़ी का खर्चा निकाल लेते हैं। रोज शाम को पैग पीकर ड्क्टर धुत हो जाते हैं। फिर किसी की सुध नहीं रहती। बस इतना ही याद रहता है कि सुबह डिस्पेंसरी जाना है, साहब की दवा ले जाना है, क्योंकि-

चोर चोरी से जाएँ, हेराफेरी से न जाएँ।

एम.एक(१), सरस्वती नगर, भोपाल-४६२००३, म.प्र.

पं. गिरिमोहनगुरुदेवनगीत

गिरिजा शंकर शर्मा

नामकनी के गाँव

पुष्प वाटिका छोड़ आ गए
नागफनी के गाँव....

श्रावण भादों के समीप थे स्वाति
सलिल थे पीते
अपनी मरजी से मरते ये अपनी
मरजी जीते
सरिताओं की कौन कहे अब
छिने नहर के ठीव...
मेड़ों पर बबूल खेतों में खरपतवार
घनेरे
आँखों में रतीले टीले लगे डालने
डेरे
सड़कों पर बेधड़क घूमते
दिखे शराबी पाँव.... •

दर्द का आकाश

आओ! जियें....

कुछ करें ऐसा कि
गोले हग हँसें
मुष्टियों में दर्द के
नभ को करें
अंधर शिकवों के सिएँ...
उम्र को सौगन्ध
सांसों में भरें
सूर्य को रजनीश का
टीका करें सिन्धु अंजुरी से पियें... •

शूण्य वन

मन धुंधलके से घिरा दिनमान
खोता जा रहा पहचान...

शून्य वन में राह भूले पथिक
सी लायार मानवता
सभ्यता के मंच पर अध्यक्ष
हित तैयार दानजता
बुद्धिवादी सिरफिरा इन्सान
होता जा रहा पाषाण...
सांझ सूने घाट पर बैठ हुआ
धीवर बना मानव
मछलियों को फांसने को ढूंढता
तरकीव बन दावन
खोता जा रहा ईमान... •

सुरेन्द्र गुप्त की कविताएँ

सुरेन्द्र गुप्त, सीकर, ४३, नौबस्ता, हमीरपुर रोड, कानपुर-२०८०२१ (उ.प्र.)

लहराती, बलखाती सीधे, स्वर्ग से आती है
गोमुख के चलकर संगा सागर तक जाती है
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जैं
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जैं

हरि चरणों से प्रकटी गंगा
शिव जटाओं से लिपटी गंगा
भागीरथ का तप है गंगा
स्वर्ग रोहिणी रथ है गंगा
सत्य सनातन संस्कृति है, संस्कार की थाती है
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जै
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जै

चंचल पावन रूप है प्यारा
शुभ्र प्रवाहित निर्मल धारा
बूँद-बूँद ज्यों चमके पारा
प्रमुदित आर्यावर्त है, सारा
आद्योपान्त, अहर्निश जग को, सुख पहुँचाती है
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जै
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जैं

आदिकाल से अविरल गंगा
बहती सदा रही है गंगा
थकी न कभी थकेगी गंगा
जग त्रय-ताप हरेगी गंगा
अहो भाग्य भारत भू पर अमृत छलकाती है
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जै
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जै

गंगा पर अतिक्रमण ये क्यों है?
अति अपरिष्टीकरण ये क्यों है??
कचरे के हित शरण ये क्यों है?
नालों का अंतरण ये क्यों है??
दर्द समेटे अंतर्मन में, सब सह जाती है
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जै
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जै

आओ सब सौगंध उठायें
गंगा निर्मल, स्वच्छ बनायें
बँधी हुई गंगा, धाराये
हम सब मिलकर मुक्त करायें
देव नदी, अतुलित, निधि, पाप से मुक्ति दिलाती है
गंगा गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जै
गंगा मइया की जै, गंगा मइया की जै •

कवि चिड़ियों के गीत लिखो,
झरनों का संगीत लिखो
भँवरों की गुनगुन क्या कहती
अनुभव जन्य प्रतीति लिखो

तितली के पंखों पर इतने रंग बिखेरे हैं किसनें?
इंद्रधनुष में सप्तरंग क्रमबद्ध उकेरे हैं किसने?
नीलांबर में ज्योतिपुंज, तारक जड़ डाले है किसने?
अवनी पर झीलें, तालें, पोखर मढ़ डाले हैं किसने?
उस अजे, अपराजय, अक्षर पर कुछ मेरे मीत लिखो

अंखुड़ियों, पंखुड़ियों, पत्रदलों, शतदल पर लिख डालो
मलयज, पावन पवन बसंती पर भी दृष्टि तनिक डालो
हरित भूमि पर फैले गुबरैलों पर भी तो कलम चले
लाल चूनरी ओढ़े बीरबधूटी पर कुछ लिख डालो
अद्भुत जीवन-हित सुरमय, सुरभित, अभिनव शुभ प्रीति लिखो

जीवन की क्षणभंगुरता का, सत्योद्घाटित कर दो तुम
काल, चिरंतन, शाश्वत सच, इसको संस्थापित कर दो तुम
इस आश्च्र्यर्यजनक सच से अनभिज्ञ सभी भ्रम में पलते
सकल सृष्टि के चरम सत्य को भी परिभाषित कर दो तुम
हार-हार कर पुनः पुनः जो जीते उसकी जीत लिखो

यह जीवन तो मकड़ जाल है, इससे कैसे बच पायें?
किसको त्यागें, ग्रहण करें क्या, सारे जग को समझायें
प्रेम-पँजीरी बाँटें आतंक और उदासी मिट जाये
सत्य, धर्म अरु न्याय हो विजयी सभी प्राणिजन सुख पायें
दावानल पर शीतलता और पुनि अनीति पर नीति लिखो। •

काव्यांजलि गीत

जगन्नाथ विश्व

ललिता का सिन्दूर

आकुल व्याकुल दुनिया सारी तुम बिन ओ
रणशूर आँख में पानी है
पूछ रहा रो रोकर हमसे ललिता का सिन्दूर
कहाँ वह दानी है

तुममें सागर सी गहराई
और हिमालय की ऊँचाई
मंजिल दौड़ स्वयं ही आई
तरुणाई तुमसे शरमाई
कहाँ हो सादगी के महा सुदामा मानवता
के मयूर दुःखी हर प्राणी है

तुमने सबको गले लगाया
हर भूले को पथ दिखाया
सबको जीवन धर्म सिखाया
शत्रु से भी हाथ मिलाया
धन्य-धन्य वह माता जिसने जन्मा तुम सा
नूर जगत ने मानी है

ममता का सम्मान जगाया
समता का दीपक चमकाया
अर्थ अहिंसा का समझाया
विश्व शांति ध्वज फहराया
निभाया गांधी नेहरु के आदर्शों को तुमने
भरपुर बात बलिदानी है

कायरता को धप्पड़ मारा
पौरुषता का रूप संवारा
युद्ध विरोधी-युद्ध तुम्हारा
जन-जीवन प्रबल सहारा
जय जवान और जय किसान का हुआ
अमर दस्तूर युग की वाणी है

जब तक सूरज चंदा प्यारा
और प्रवाहित गंगा धारा
कोटि कोटि जन ने उच्छारा
अमर रहेगा नाम तुमारा
करो श्रृद्धा के फूल ओ महायात्री हम सबके
मंजूर शेष निशानी है •

बेंक अफसर अंगवस्त्र पहनाते हैं। पीछे विशेष अतिथि श्रीमती राजपुष्पम

आदरणीय सुधीरनजी का आदर सम्मान

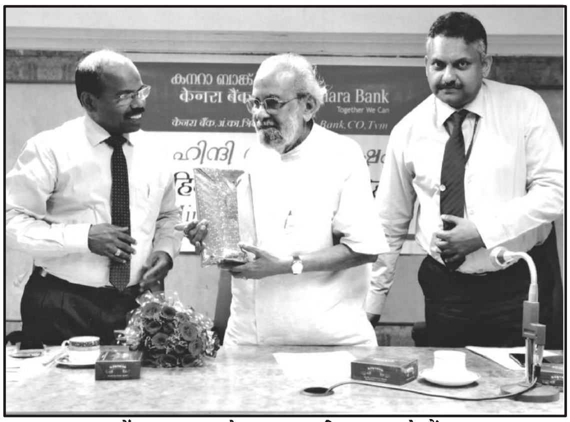

बेंक अफसर से सम्मान स्वीकार करते हैं।

त्रिवेन्द्रम केनरा बेंक के हिन्दी दिवस का आचरण। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर मुख्य अतिथि थे, उनका स्वागत। समीप विशेष अतिथिगण

दीप जलाकर उद्घाटन करते हैं। समीप विशेष अतिथि श्रीमती आर.राजपुष्पम

मेनेजर और अफसर से मधुर भाषण

नायर जी अध्यक्ष भाषण देते हैं।

प्रस क्लब के हिन्दी सम्मेलन का दृश्य

पंजीयन संख्या R. No. 26957 - 1996

वी.एम.सुधीरनजी को केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का मद्यनिरोधन पुरस्कार डॉ. नायर जी प्रदान करते हैं।

सम्मेलन का उद्‌घाटन जस्टीस
एम.आर. हरिहरन नायर जी दीप जलाकर करते हैं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का मन्त्री
श्रीमती राजपुष्पम रिपोर्ताज प्रस्तुत करती है।

जस्टीस हरिहरन नायर उद्‌घाटन भाषण हिन्दी में देते हैं।

जस्टीस हरिहरन नायर को डॉ.नायर जी का आदर-सम्मान

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।